प्रकाशक
गुलाबचन्द मेड़तिया
प्रोप्राइटर मानकचन्द बुकडिपो,
उज्जैन (मालवा)

प्रथम संस्करण
१०००

मूल्य
१) एक रुपया

लेखक की आज्ञा बिना यह नाटक स्टेज करने या फिल्म बनाने का किसी को भी अधिकार नहीं है।

मुद्रक
बृजकृष्ण भार्गव,
भार्गव फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स,
सियागंज इन्दौर.

'उग्र' का यह नाटक ग्वालियर राज्य की
भावुक, ग़रीब और ईमानदार जनता को
सप्रेम समर्पित है—
उसी जनता को जिसे दिवंगत महाराज
सचाई और ईमानदारी से 'अन्नदाता'
पुकारा करते थे।

'उग्र'

पात्र

१ श्रीमंत महाराज माधवरावजी सिंधिया	गवालियर नरेश १८९५ से १९२५ ई. तक
२ धनिकलाल .	. महादपुर ग्राम का एक बहुत गरीब और बूढा अध्यापक.
३ जनरल नानासाहब शिन्दे बड़ोदे	
४ श्री रामजीदास वैश्य ...	.. ताजिरूल मुल्क
५ दामोदर .	.. गाव का पटवारी
६ गोविंदशंकर	गाव का ज़मींदार
७ रामशंकर	गोविंदशकर का पुत्र
८ गंगादीन	धनिकलाल का पाला हुआ। एक अज्ञात-कुल-जाति

सरदार, गाव के आवारे, बचे, अफसर

९ कस्तूरी	मास्टर धनिकलाल की पोती
१० जानकी	धनिकलाल की चाची

दासिया, नाच-नारिया वगैरह

काल—१९२० से २४ ईस्वी तक



आवश्यक

नाटक के बारे में—माधव महाराज महान—नाटक पहले है और महाराज का चरित्र-चित्रण बाद में। चरित्र-चित्रण तो जीवनीका विषय हो सकता है या उपन्यास का; नाटक का जो रूप दुनिया में स्वीकृत है नाटक में पहले मध्य और अन्त में वही झलकना चाहिए।

माधव महाराज सचमुच महान थे। उनका सारा चरित्र सौपेजमें खींचना सम्भव काम नहीं। उनकी प्रतिभा बहु-मुखी क्या सर्वतोमुखी थी। जिस आसानी और चमत्कार से वह मराठा-पल्टन के शहसवारो की सर्दारी करते थे उसी आसानीसे आफिस भी देखते थे और वैसेही भाव बतला कर गा भी सकते थे! ऐसे-ऐसे दो नाटक और लिखने पर भी स्वर्गीय श्रीमान का गुण-गान समाप्त होने में मुझे तो सन्देह है।

मेरा राज-दर्बारो मे परिचय बिलकुल नहीं, व्यक्ति-गत स्वर्गीय महाराज को मैं मुतलक नहीं जानता। फिर भी उनकी लिखी 'दरबार-पॉलिसी' के कई जिल्द पढने और अनेक भाषण देखने से मालूम पडता है कि असिल मे महाराज बहादुर क्या थे। चन्द विदेशी-ग्रन्थकारो के आधारपर आगे-पीछे माधव महाराज को 'स्टीम रोलर' की उपाधि कोई देशी जानकार नही दे सकता—जब वह जानेगा महाराज के समकालीन भारतीय राजो की अन्दरूनी हालात।

नाटक मे धनिकलाल, कस्तूरी, गंगादीन सभी कल्पित करेक्टर हैं। सत्य व्यक्ति शायद तीन है—माधव महाराज, नाना (जनरल नानासाहब सिंदे, घटोंदे) और रामजीदास वैश्य (ताजिरुल मुल्क, वफ़ादार दौलते सिंधिया) सन १९२७ के मराठी मासिक 'रत्नाकर' में माधव महाराज पर नानासाहब का एक सुन्दर लेख है और सन् १९२६ में प्रकाशित 'ज्याजी प्रताप' के माधव महाराज स्मृति-अंक में श्रीरामजीदास वैश्य का वर्णन—'प्यारे सरकार की अनमोल बातें।' उक्त सज्जनों के लेखों के आधार पर नाटक मे कई घटनाएं खडी की गयी हैं और भोजन बनाने वाली घटना, मातृ-मूर्ति की सफाई की बात—नाना और रामजीदास की बहुत सी बातें—प्राय उन्ही के शब्दों में हैं। राज-सबन्ध में महाराज के

मुह से ज्यो वाक्य कहाये गये हैं अक्सर वे उनके भाषणों या पुस्तको मे संग्रहीत हैं जिसका लुत्फ उन पाठकों से खास मिलेगा जिन्होने महाराज का और के बारे मे ज़रा 'केयर' से पढा है। जब मैं नाटक लिख रहा था मेरे पास महज निम्न-लिखित मसाले थे—(१) 'जयाजी प्रताप' के महाराज सबन्धी आगे-पीछे के विशेषाक-संग्रह (२) 'दरबार पालिसी' कई जिल्द (३) गवालियर-राज का लैन्ड रिकार्ड्स मैनुअल (४) कई प्रोसीडिंग्स कान्फरेन्स जागीरदारान (५) प्रोसीडिंग्स मजलिस आम गवालियर (६) इन्तिखाब स्पीचेज हुजूर मुअल्ला दामइकबालहू, मुतल्लिक सरदार स्कूल, (८) गवालियर भू-परिचय (९) आत्रेय अवन्तिका, (१०) शिन्देशाही इतिहासातील सुरस गोष्टी (११) सचित्र उज्जयिनी (१२) विजय वैजयन्ती (१३) महाराज महादजी सिन्धिया और (१४) उसी नाम का मराठीसे अनूदित एक हिन्दी नाटक (१५) गवालियर रेवेन्यू कान्फरेन्स सन १७ मे महाराज की स्पीच (१६) मैनुअल मजलिस कानून और (१७) मेमोरेन्डम नम्बर ३३ बाबत खास फरायज ऑफ़िसरान। बहुत-सी और भी पुस्तकें मिल सकती थीं मगर क्यो न मिलीं सो कहने की यह जगह नहीं।

एक बात और—'प्रसाद' जीका वह नाटक जिसमें 'आह, वेदना मिली बिदाई' गीत है मेरे इस नाटक की घटनाओं के बाद प्रकाशित हुआ है। मगर 'प्रसाद' के सभी नाटक कई बरस बस्तो में बँधे रहने के बाद प्रकाश में आये और मेरे नाटक के कवि को छपने के बरसो पहले

गान का पता था।

मैं कहता हूँ—जितना पढकर जितनी सावधानी से मुझे यह नाटक पडा है उतना परिश्रम दूसरे एक पर भी नही पडा था।

मैं अपने परिश्रम, सावधानी और फल सभी से सन्तुष्ट हूँ—मगर तब जब भगवान महाकाल पाठकों को भी सन्तोष दे। एवमस्तु।

स भा हि सा समिति-भवन
इन्दौर, मालवा
४ मई १९४३ ई

—पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र'

उज्जैन





[हम कल्पना करते हैं कि उज्जैन के 'कालियादह महल' के आसपास एक अच्छा खासा गाव है, जिसमे पटवारी, पटेल, पोस्ट-आफिस, पाठशाला सभी कुछ है। वैसे कालियादह महल के पास ही भैरोगढ की बस्ती है, मगर वह हमारे प्लाट के उपयुक्त नहीं। वैसे ही कालियादह नामका गाव हमारे लिये बहुत छोटा है। अतएव हम एक नये गाव की कल्पना करते हैं —महादपुर।

अक्सर गावों के स्कूल जैसे होते हैं, और जैसे स्थानों पर, महादपुर की पाठशाला भी वैसी ही और वैसे स्थानपर है—एक कच्चे-पक्के मंदिर के झोपड़ीदार बरामदे में। इसी बरामदे में बाहर के साधु-बैरागी आकर ठहरते हैं, नगर के उचक्के गाजा और चरसके दम मारते हैं, भक्त कीर्तन करते हैं और मास्टर-पोस्ट-मास्टर धनिकलाल की पाठशाला लगती है।

मंदिर की बगल में एक कच्ची-झोपडीनुमा मकान नज़र आता है उसमें भी फ़र्मों की ओमारी है। वही मास्टर का प्राइवेट घर है।

स्थान खुलते ही मास्टर पोस्ट-मास्टर की हैसियत से उज्जैन के एक नये कवि से बात कर रहा है। धनिकलाल सत्तर-पचहत्तर बरस का बूढ़ा, लम्बी-दाढी, आंखपर मोटा चश्मा और बहते आसु, जरा झुका हुआ है। उसके चेहरे की बनावट दार्शनिक है। वह रह-रह कर रूमाल से आसू पोंछता है।]

धनिकलाल—श्रीमहाकाल या ईश्वर की कृपा से कविता आती है। क्या आपने अपना पवाड़ा महाराज बहादुर के नाम भेज दिया ?

कवि—भेजा नहीं। आप ही के शुभ हाथो से भेजना चाहता हू। पहले सुन तो लीजिये, और फिर स्पष्ट-राय दीजिये कि तुकबंदी महाराज साहब बहादुर के पास भेजने लायक़ है या नहीं।

धनिकलाल—सुनाइये ! (चश्मा उतारकर आसू पोंछता)

कवि—(पढता है)

पवाड़ा

जयवान-वंश सिंधिया
धर्म-नयवान-वंश सिंधिया
शत्रु-भयवान-वंश सिंधिया !

कि जिसने प्रगट पराक्रम किया
देश हित विकट परिश्रम किया
पराजित कर पर. विक्रम किया

जयवान-वंश सिंधिया
धर्म-नयवान-वंश सिंधिया
शत्रु भयवान-वंश सिंधिया !

महाशय राणोजी सरनाम
जयाप्पा दत्ताजी, जोतिबा,
तुकाजी माधाजी गुण धाम ।

अरे ये कई नाम क्या नाम—
एक से एक उजागर काम !

जयवान—वंश सिंधिया
ज्ञान—नयवान—वंश सिंधिया !

हुए श्रीदौलतराव विचित्र
किंतु जनकोजीराव पवित्र—
कर गये जो कुछ वीर-चरित्र
नरवा अभिमन्यु की तरह मित्र !

जयवान-वंश सिंधिया,
धर्म—नयवान—वंश सिंधिया !
राजऋषि विदित जयाजीराव
रखे चित रय्यत के हित भाव ।

तनय तिनके श्रीमाधवराव
दूसरे शिवा-समान प्रभाव
हमारे बड़े करमफर्मा ।

चीन तक बढ़े, डटे बर्मा
महारण की गर्मागर्मा
में बड़े रे अद्भुत कर्मा !

जयवान—वंश सिंधिया,
धर्म नयावन-वंश सिंधिया !

[पवाडा के बीच ही में ग्राम के कुछ गंजेडी आते हैं और धृष्टता से खड़े होकर इंतजार करते हैं कि कब पवाडा गाने और सुनने वाले वह जगह छोडें जिससे उन्हें अपना प्रोग्राम जमाने का मौका मिले। उन्हीं गंजेडियो में एक जंगली-रखवाला याने रेंजर भी सरकारी ड्रेस में है और शायद वह भी चिलम पीने को आया है।]

धनिकलाल—हरएक काम आदमी किसी मकसद से करता है। क्या आप बतलावेंगे कि इस पवाडा लिखने में आपका क्या मतलब है ?

कवि—महाराजा को प्रसन्न करना और राज्य से जो कुछ हो सके सिद्धि—प्रसिद्धि भी !—आपसे झूठ नहीं कहूँगा ।

धनिकलाल—ठीक है। हमारा सबंध ही ऐसा है कि हम आपस मे चापलूसी के लिये झूठ नही बोलते। मेरे मतसे तुम्हारे पवाडे की तुकबदी निहायत लचर है। और हमारे सरकार बहादुर-ऐसे रईस के सामने भेजे जाने लायक हरगिज़ नही।

कवि—(उदास) तो आपकी राय है कि मैं इस कविता को न भेजू ?

धनिकलाल—कविता दूसरी चीज है बाबूजी और आपका यह पवाडा कुछ और। इसमे शिंदे-वश की ऐतिहासिक-सूची के सिवा और क्या है ? मेरे मत से कलाकार जबतक जिम्मेदारी से पक न जाए उसे प्रचार या पुरस्कार के लिये पागल न होना चाहिए। फिरभी मै अपनी राय किसी पर लादता नही (कुछ चिट्ठीया सँम्हालकर उठता है) इन्हे ठिकाने पहुचानी हैं।

एक गंजेडी—(हाथ जोडकर) दुहाई मास्टर साहब की। हम लोग भी किसी उम्मीद में खडे है।

धनिकलाल – हा-हा भाई—आओ—आओ ! उम्मीद पूरी करो। मै तो यह चला।

कवि—(गुस्से से कविता को दूर फेकते हुए) मै भी आपके साथ ही चलता हू। आपकी राय सही है। जबतक रस न हो तबतक रसिको के सामने जाना-पूरी विरसता नहीं तो क्या है।

[धनिकलाल के पीछे कवि भी जाता है। इधर उनकी जगह पर गाव के गंजेडी डट-जाते है और वह रेंजर भी]

१ गंजेड़ी—(व्यग से हसता है) कल के छोकरे चले है कविता करने। ह ह ह ह।

२ गंजेड़ी—अपने मास्टर भी पूरे ईमानदार है मन्न बात दो-टूक कह दी !

३ गंजेड़ी—ऐसा दो-टूक कि बेचारे ने अपने सारे परिश्रम को धूल मे फेक दिया।

१ गंजेड़ी—वह देखो ! हवा मे खड़खड़ा रहा है।

२ गंजेड़ी—(रेंजर से) अरे जरा उसको उठाना तो ! रस्सी जलाई जाय उससे।

[रेंजर कागज को लेने बढता है तबतक तीसरा गजेडी माचिस लेकर उससे रस्सी जलाता हुआ कहता है—]

३ गंजेड़ी—अरे उस कवि का वह कागज हमारे की रस्सी जलाने लायक भी नही। चिलम मे कागजी आजाएगी (पहले गजेड़ी स) हॉ उस्ताद ! जरा कुछ ललकारो !

१ गंजेड़ी—(गाजा मलता हुआ ललकार कर बे-सुरा गा चलता है)

गाना

बेगम समरू थी ईसाइन
कशमीरी था कुछ-पर डाइन
उसको था शक उसकी दासी
थी उसी पियाले की प्यासी
जिसको पी-पी कर भरभर मुँह
फिर भी प्यासी बेगम समरू

× × ×

बेगम समरू थी ईसाइन
कशमीरी था कुछ-पर डाइन
उसने दासी को बुलवा फिर
अपने कमरे मे खुदवाकर
गडवाकर मरवाकर—जी-भर
हुक्का पीया उस मिट्टी पर !

[इसी वक्त दो-तीन जगली ग्वालिये दौडते आते हैं घबराए]

१ ग्वालिया—अरे दौड़ो ! आदमी को मगर ने पकड़ा है !

रेंजर—(बहुत उत्सुक) किस आदमी को ? कहा है मगर ?

२ ग्वालिया—उधर–नदी के पूरबी किनारे पर, मालूम पड़ता है जानवर किसी आदमी पर झपटा है।

१ गंजेड़ी—अरे मारो भी ! बिना मौत कोई मरता नहीं, इसलिये किसी की फिक्र वदा करता नहीं।

[मगर तब तक तो वह रंजर उस स्थान से गायब]

२ गंजेड़ी—जगली रखवाला भाग गया ।

३ गंजेड़ी—अभागा है । दम लगाकर जाना तो जग दमखम से मौका सभाल पाता ।

२ गंजेड़ी–(चिलम सभालकर फकफक करने के पहिले)
लगे दम, मिटे गम, अगड़बम !

[इसी वक्त मास्टर के घरवाले ओसारे मे मकान के अंदर से निकल कर कस्तूरी और गगादीन बाहर आते गजेडियो को नजर आए । न जाने क्यों थोडी दूर होने पर भी उनको देखकर गजेडियो ने चहकना बद कर दिया । अब हमारी नज़र मास्टर के गरीब घर की तरफ अच्छी तरह जाती है । कच्चा मकान, फूस का ओसारा जिसमे एक टूटी चारपाई पर स्कूल के कई नक्शे पडे हैं और हाथ से बंधनेवाली भगवा-रग की एक फटी-पुरानी पगडी । घर-अदर से ही गगादीन एक लबा बास लेकर निकला है जिससे उस पगडी को खाट से उठाकर वह दीवार से अटकाने बहाने कस्तूरी को छेड़ता-सा है कि वह कुछ बोले । फिर भी उसको देख पगडी को बास के सहारे दीवाल से सटा बाल-सुलभ-अदा मे बोला—

गंगादीन—तुम्हारा सपना कस्तूरी बहन महाराज के फल मे मगल-मय है लेकिन

कस्तूरी—(चमककर) अरे वाह ! यह सपने की विद्या भाई, तुमने कब और किससे पढी ?

गंगादीन—(घायल-दर्प से) मै अज्ञान, मै बेवकूफ ही सही, मगर यह राय मेरी नही प्रसिद्ध-ज्योतिषी सर्वज्ञदेवजी की है।

कस्तूरी—(उदास) तो जो बात भेद की तरह, अपना जानकर, मै किसी से कहूँ उसे भी सर्वज्ञदेव जान गये ?

गंगादीन—(सहृदय) तुम्हारे कल्याण के लिये बहन

कस्तूरी—(उसाँस) लेकिन ज्योतिषी ने तो कल्याण का वादा नही किया ? आह ! कैसा सपना ! (रोमांचित)

गंगादीन—(गभीर जिज्ञासा) तुमने क्या महाराज को दूल्हे के रूप में सजा हुआ देखा ?

कस्तूरी—(अनुरक्त-खीझ) कितनी बार सुनाऊँ। न तुम पूछ कर समझ पाये और न मै बतलाकर समझा पाई। मैने देखा—मेरा व्याह हो रहा था मगर मडप मे दूल्हा नही—थे हमारे महाराजा, दादाजी और मै, और मडप, चौक, कलश, स्तभ, गणपति, गौर्या, दूर्वा, नवग्रह, हल्दी, अबीर, चदन (रोने लगती है)।

गंगादीन—(घबराया) लो—तुम तो रो चली। महाकाल मत्र मगल करेगे बहन ! मै दावे से कहता हू रामशकरभाई आखिर को पछतायेगे और दिन के भूले शामको जरूर ठिकाने आवेगे।

कस्तूरी—(गर्व) मै किसी और का नाम नहीं लेती,

मगर महाराजने इस तरह सपने मे दर्शन क्यो दिये ?

गंगादीन—ज्योतिषी महाराज ने फर्माया कि देव और राजाके सपने मे दर्शन तो शुभ है मगर अपना व्याह देखना अमगल-प्रद होता है।

कस्तूरी—(उन्मन) क्या कहा ज्योतिषीने भाई ? व्याह अमगल-प्रद होता है ?

गंगादीन—(कस्तूरी का भाव समझ खीझ से) अरी सपने का व्याह। असिल व्याह अगर मगलमय न होता तो बजा-गाकर कोई ससार रचताही क्यो ?

कस्तूरी—(गभीर) मुझे तो इस शब्द से, सच कहती हू, बेचेनी-सी पैदा होती है।

गंगादीन—(उत्साहक) तुम्हारी बात ही जुदी है बहन! व्याह पक्का, सारी तैयारी दुरुस्त और ठीक वक्त पर एक विधवा के साथ तुम्हारे निश्चित-पति सनक गये ? विचित्र बात ! बेजोड!! ..रे दादाजी गरीब न होते और गोविंदशकर बडा जमींदार होता तो सरासर वर वालो पर दावा किया जा सकता था। गरीब है इसीलिये लड़के की नालायकी पर भी मेरी बहन को ..नी प्रतीक्षा

कस्तूरी—(व्यग्र-तीव्र) चुपरहो ! मै किसी की प्रतीक्षा-प्रतीक्षा नही करने वाली हू। दादाजी अगर उस जमींदार के

कर्जदार न होते तो यह सब—कुछ भी न होता ।

गंगादीन—मगर बहन ! दादाजी तो हर्गिज कर्ज नही लेते; चाहे भूखे और लटे-फटे ही क्यो न रहे । कर्ज सारा उनके पिताजी का है ।

कस्तूरी—(गभीर) माना। मगर देने वाले तो आज दादाजी ही रह गये है ना? और वह भी ऐसे कि बिना पितरो का कर्ज दिये उन्हे चैन नही । सो अठारह मास्टरी और छह पोस्ट-मास्टरी के—कुल चौबीस रुपये पानेवाले के तेरह रुपये तो सूदमे गोविंदशकरजी के हवाले होते है ।

गंगादीन—(साश्रु) फिर भी दादाजी की हिम्मत है जो ऐसी अदना आमदनी मे इतना कडा सूद देकर भी मुझ जैसे ला-वारिस के वारिस है ।

कस्तूरी—अपनी विधवा, बूढी चाची का और मेरा पालन

गंगादीन—(विश्वास) यह लफ्ज नहीं बहन ! पालन ही नहीं दादाजी तुम्हारा लालन-पालन करते है। तुम्हारे बिना शायद ही वे जीते रहे ।

कस्तूरी—सो, हमारे लालन-पालन मे और सब के भोजन के मात्र ग्यारह कैसे पूरे पडते होगे, सभी इस बात पर ताज्जुब करते सुने जाते है। लेकिन सबको क्या मालूम कि खुद दादाजी कैसे शरीर रक्षण करते है ।

गंगादीन—दादाजी तुलसीदास का यह पद गाते-गाते रो पडते है—" नाथ गरीब नवाज है, मै गही न गरीबी "

कस्तूरी—रोना तो दादाजी को वरदान-सा मिला है। रातोदिन उनकी आखो मे आसू जारी ही रहता है।

गंगादीन—लोग कहते है कि यह घोर-बुढापे का लक्षण है।

कस्तूरी—लोग पागल है, हमारे दादाजी अभी तो सत्तर सालही के है। वह उस श्रेणी के आदमियो मे से है जिन्हे अनायास ही सौ-साल तक जीवित रहना ही चाहिए। पर आये दिन जो उपवास करता रहेगा, खायेगा भी तो रूखा-सूखा या चना; आजी कहती थी कि जवान भी अगर दिनो तक महज सूखे चने खाय तो जलजला उठेगा। कोरे चने खाने से आसू बहुत आते है।

गंगादीन—इस बारे मे जब मैने स्वय दादाजी से दरि-
।‥ किया तो उन्होंने बतलाया कि आसू चनो से
~ बल्कि गोस्वामी तुलसीदासजी की रचनाओ को समझने
।र उस्ताद गालिब को हमेशा रटते रहने के कारण यह
।लिब उस्ताद कौन है बहन ?

कस्तूरी—उस्ताद की कई गजले तो मेरी भी जुबान पर है। दादाजी उन्हे उर्दू जुबान का सब से बड़ा शायर मानते हैं

और 'मीर' के साथ 'गालिब' और 'नजीर' अकबराबादी को भविष्य मे अवश्य होने वाले हिन्दू-मुस्लिम-मेल का उल्का या मशाल-धारी कहते है। (दूर पर दामोदर को जाते देख) वह कौन ! क्या गाव का पटवारी दामोदर है ?

गंगादीन— है तो वही, आजकल यह हमारे दादाजी को क्यो घेरे रहता है ?

कस्तूरी—(झोपडी मे जाती हुई) तुम्ही उससे बाते करो, पूछे तो कहना दादाजी एक घटे बाद आवेगे। (मगर पटवारी इधर न आ दूसरी तरफ चला जाता है)

गंगादीन—(कस्तूरी को पुकारकर) अरी ओ ! वह तो उधर मुड गया, तू अदर योही क्यो घुसी जारही है, सुन तो—दादाजी गा रहे है; शायद—आरहे है (कस्तूरी बाहर चली आती है)

नेपथ्य—(धनिकलाल की बुढापे की आवाज़)

गज़ल

दिले नादां तुझे हुआ क्या है
आखिर इस दर्द की दवा क्या है
हम है मुश्ताक़ और वह बेज़ार
या इलाही य माजरा क्या है

—गालिब

कस्तूरी—यह उस्ताद गालिब की एक मशहूर गजल है।

गंगादीन—क्यो बहन 'मुश्ताक' के क्या माने ?

कस्तूरी—(कोई जवाब न दे उसका मुह देखती रह जाती है कि धनिकलाल आता है)

धनिकलाल—'मुश्ताक' के माने लोगन से फिर समझाऊगा, फिलहाल तो यो समझो कि मुश्ताक माने इच्छुक, आतुर, प्रेम या सामीप्य का ....

गंगादीन—प्रेम या सामीप्य . मै समझा नही दादाजी !

धनिकलाल—अच्छा तो इस तरह समझो, य' रही कस्तूरी, इसे पहिचानते हो ?

गंगादीन—हॉ, हॉ, यह तो मेरी प्यारी बहन है।

धनिकलाल—माना, बस ! इसी पर मेराही इतना प्रेम कि मै इसकी खुशी का मुश्ताक रहता हू।

कस्तूरी—(किंचित् लीला) मगर मै तो आपसे 'बेजार' ही दादाजी ?

धनिकलाल—(कस्तूरी के निकट जाकर सस्नेह) हॉ, बेटी ! यही पर उस्ताद गालिब की शायरी हमारे काम लायक नहीं। हॉ, गोस्वामीजी ने 'विनय' मे फर्माया है—ज्यो-ज्यो

निकट भयो चहौ करुणानिधान त्यो-त्यो दूरि पर्यो हौ ।—
(धनिकलाल की आखो से अविरल प्रेमाश्रु जारी)

[इन्ही समय थोडी देर पहले गजेडियो के बीच से नदी की तरफ़ भागा हुआ रजर धनिकालाल की विधवा बूढी काकी जानकी को उठाये हुए आता है जिसकी एक टाँगपर जख्म और लहू नुमाया है । रेजरके बाये हाथ पर भी खासा जख्म है जिसकी तरफ से वह लापरवाह । ध्यान से देखने पर वह मझोले कदका, गठीला, चौडे सीने—बडी-बडी आँखोवाला मजबूत आदमी दिखता है । जानकी उसके हाथ मे कराह रही है ।]

जानकी—आह ! अह !

रेजर—यही तुम्हारा घर (घर कहते उस ऊजड़ को रेजर रखता है) ?

जानकी—(कष्टसे) आह ! अह ! हाँ मेरे रजा ! प्राण रक्षक ! आह ! (तब तक तो सभी दौड़कर घेर लेते है गगादीन, कस्तूरी, धनिकलाल)

गंगादीन—(चिल्लाकर) ओ माँ साहब ! क्या हुआ तुम्हे ?

कस्तूरी—(घबराकर) आजी ! आजी ! इतना लहू क्यो जा रहा है ?

जानकी—(कष्ट से) आह ! ऊह ! मुझसे पहिले मेरे रजन की फिक्र करो ! मेरे राजा के हाथ से भी खून जारहा

है। अह! कितना बड़ा जानवर!

रेंजर—(धनिकलाल वगैरहसे) घरमे टिंचर रूई, कपडा है? बूढ़ी मां का ज़ख्म फौरन सॅम्हालना होगा। (मगर सभी अभाव से चुप रेंजर का मुह देखते)

धनिकलाल—टिंचर, रूई और कपड़े की बात रईसो के घर होती है। यहा तो हमेशा नोन-तेल-लकडी के लाले रहते है।

रेंजर—(ताज्जुब से) आप क्या काम करते ?

गंगादीन—(सगर्व) हमारे दादाजी महादपुर स्कूल के अध्यापक

धनिकलाल—और गाँव का पोस्टमैन (कस्तूरी को दिखा) इसके गुलाम (गगादीन को बतला) इसके चाकर (और घायल बूढी को दिखा) और इन मा साहब का मे नौकर हू।

हैराँ हूँ दिल को रोऊ कि पीटूँ जिगर को मैं
मक़दूर हो तो साथ रखूँ नौहागर को मैं

—गालिब

रेंजर—मगर यहाँ से महल तो नजदीक है, आजकल यद राजा भी वहां रहता है।

धनिकलाल—(अदब से झुककर) हम अपने महाराज के बारे मे इस लहजे मे नहीं बोलते। बेशक हमारे आलीजाह बहादुर आजकल इसी कालियादह महल मे तशरीफफर्मा है।

आप कहे तो इस लड़के को मै दौडाऊँ ? बेटी ! जरा हल्दी पीसकर जल्द लाओ तो। चाचीजी की रक्षा मे इनके हाथ मे ज्यादा जख्म लग गया है। (कस्तूरी जाती है तेज)

रेजर—धन्यवाद हैं ईश्वर का ! जिसकी कृपा से बूढ़ी बच गई। जरा भी देर होती तो वह जानवर खत्म ही कर डालता (कस्तूरी हल्दी लाकर रेजर के हाथ मे लगाने को बढती है मगर वह मर्दानी-नम्रता से कटोरी उसके हाथ से ले लेता है) बाई ! पहले मा साहब की सेवा होनी चाहिए; वह बूढी है।

जानकी—(साग्रह) नही बेटी कस्तूरी, पहिले मेरे प्राण-रक्षक की सेवा हो, मेरे जीने-मरने मे क्या रखा है; मगर ऐसे नर-रत्न के प्राण बेशक सॅम्हालने योग्य है जो मुझ-जैसी के लिये भी अपनी जान जोखो मे डाल दे ! (कस्तूरी रेजर को बड़ी श्रद्धा से हल्दी लगाती है कि गाव का पटवारी दामोदर आ धमकता है। बड़ी अकड़ से आते ही वह सारी मजलिस को घूरकर कस्तूरी व रेंजर को असभ्यता से तरेरता है)

दामोदर—(असभ्य) क्यो धनिकलालजी ! क्या आप की पोती का व्याह होगया जमींदार के लड़के से ?

[लज्जा से कापकर कस्तूरी लाल हो उठती है और उसके हाथो मे हिलकर हल्दी का पात्र जमीनपर गिर पडता है]

रेंजर—(धनिकलाल मे पटवारी के बारे मे) आप कौन है ?

दामोदर—(अप्रसन्न सगर्व) देखना हू जगली रखवाला जगली भी है ।

रेंजर—(निर्भय) मै तो बेशक जगली रखवाला हू मगर आप ?

धनिकलाल—(बीच ही में) आप महादपुर गाव के पटवारी साहब हैं ।

रेंजर—अब पहिचाना । गजेड़ीलोग आपकी बहुत तारीफ करते थे । पटवारी साहब ! यह बूढ़ी मरी जा रही है । इसे मैंने मगर की दाढ से बचाया है, अब आप दवा-दारू का तो इन्तजाम कीजिये ।

दामोदर—(स-खीझ) बूढ़ी गई क्यो ऐसे सन्नाटे मे नहाने ? गाव मे क्या इसके लिये अस्पताल खुला धरा है ? फिर गजेड़ी लोग मेरी तारीफ तुम जगली से क्या करेगे– होश की बाते नहीं करते !

धनिकलाल—

हर एक मकान को है मकीं से शरफ़ 'असद'
मजनू जो मर गया है तो जंगल उदास है ।
—गालिब

रेंजर—आदमी का गुन हजार छिपाने पर भी कस्तूरी की तरह फूट कर निकलता है ! फिरतो जगली और गजेडी

सभी उसको जानते है, पटवारी जी ! आप कालियादहमहल की तरफ कोशिश कीजिये तो मुमकिन है बूढी बच जाय !

धनिकलाल—दामोदरजी को दीगर दस जरूरी काम होंगे। अरे, तू ही झपट कर जा तो गगादीन !

रेंजर—(पटवारी से स-तेज) मै समझता हू आपका जाना बेहतर होता पटवारी साहब ! और काम जल्द होगा आपके जाने से [गगादीन भागता जाता है]।

पटवारी—(स-क्रोध) मै पूछता हू तुम पहचानते नही मुझे ? मुझे इस तरह आर्डर देने वाले तुम जगल के रखवाले ! ऐसी सडी-गली बूढियो के लिये महादपुर गाव का पटवारी ...

रेंजर—(व्यग्य से) साहब का नाम ?

धनिकलाल—(झगडा घटाना चाहता) आपका शुभ नाम दामोदरजी है। (गोविन्दशंकर को आने देख) लीजिए, जमीदार साहब भी आ गये।

[एक तरफ से जमीदार गोविदशकर आता है और दूसरी तरफ से मोटी पोशाक मे कई पुरुष आते हैं जो रेंजर की तरफ गौर से देखकर न जाने क्यो दूर ही पर खडे रह जाते हैं।]

गोविंदशंकर—भाई धनिकलालजी ! यह कैसी भीड है ? मै कहता हू अब तो आप रुपयो का इन्तजाम जहा तक हो सके जल्द कर दे। यह शादी-वादी होनेवाली नहीं। नौ

मन तेल होगा न राधे नाचेगी ! न वह नालायक सॅम्हल कर लौटेगा और न तुम्हारी पोती की शादी होगी ।

दामोदर—(प्रसन्न) लिखा न विधि वैदेहि विवाहू ।

[कस्तूरी लज्जित ज़रा एक किनारे हो रहती है]

रेंजर—अच्छा ! लड़का आपहीका है ? आपका शुभ नाम ?

दामोदर— (चिढ़कर) यह जगली रखवाला हरेक बात मे दख़्ल देता है; एक बूढ़ी को क्या बचाया बैरिस्टर मिस्टर पोपट बन बैठा है ।

रेंजर—मै कहता हू पटवारी साहब ! इस बूढ़ी की दवा का इतज़ाम करना आपकी और जमींदार साहब की ड्यूटी है; भले ही इसके लिये भैरोगढ तक का चक्कर क्यों न काटना पड़े ।

गोविंदशंकर—(गभीर) मगर तुम नये रेंजर नजर आये जमींदार और पटवारी को कर्तव्य सिखलाने वाले (डाटकर) जाओ ! अपना काम करो ! छोड़ो इस पचड़े को !

[दूर पर खड़े लोग बे-अदब जमीन्दार पर झपटतेही हैं कि रेंजर उन्हें इशारे से रोकता नम्रता में कहता है]

रेंजर—किसी दूसरे नाते नहीं सरकार, महज मनुष्यता के नाते—बूढ़ा हो, जवान हो, अमीर हो या ग़रीब घाव सभी को पीड़ा करता है ।

[लोगों की नजर जानकी पर जाती है। कस्तूरी हल्दी बाध रही है]

जानकी—आह ! ऊह ! हरसिद्धिमाता तुझे जल्दही सौभाग्यवती करे बेटी !

[कस्तूरी चमक पडती है और गोविंदशंकर भी !]

गोविंदशंकर—कम-से-कम मेरे नालायक़ से तो अब यह सौभाग्य-सबध होने वाला नही । बेहतर—धनिकलालजी, मेरे रुपयो का इतजाम कर दीजिए ।

रेंजर—आप लोगो की बातें ऐसी है कि अपना दर्द भूल-कर भी मुझे बोलना पड़ना है, क्या रुपयो की शर्तपर यह सगाई होने जारही थी ?

धनिकलाल—(लड़खड़ाता) दरिद्रता-दोष गुणो की राशिपर पानी फेर देता है ।

रेंजर—लड़की सयानी होगई सो तो कोई अफसोस की बात नहीं । मुझे आप लोग कम-अक़ल समझें, बेपर्दा माने, लेकिन मै नो सयानी लडकियों की शादी पसद करता हू न कि गुड्डे-गुड़ियो की ।

दामोदर—मालूम पड़ता है आज ही कल मे उज्जैन-आर्य-समाज मे इसने कोई लेक्चर सुना है । अरे जा बाबा रस्ते लग ! क्यो अपने गले पड़ता है ।

रेंजर—अगर जनाब अपनी ड्यूटी नहीं जानते तो रस्ते लग सकते है खुशी से। मैं ज़्यादा जरूरी काम मे यहा

दामोदर—शादी से भी जरूरी काम ?

रेंजर—ओह ! आप भी शादी की ताक मे पधारे हैं ! मेरी गुजारिश है, शादी से भी सावधान दुःख और मौत पर नजर रखना। यह बूढ़ी दुःखी है। आप लोग पहले इसकी दारू का इतजाम करे।

दामोदर—या भगवान ! जगली रखवाला और बात-बात मे नवाबो की तरह आर्डर देने की आदत !

गोविंदशंकर—बदतमीज़ी !

[ज़मींदार के मुह से बुरा लफ्ज निकलते ही जरा दूर पर खडे कई आदमी उसकी तरफ गुस्से से देखते हैं और एक तो बोलता ही है]

१ आदमी—तमीज और बदतमीजी सारी उड़ जायगी।

[रेंजर बोलने वाले को इशारे से शात करता है]

रेंजर—इस आपसी बात मे आप लोग चुप ही रहे तो बेहतर। (जमीदार और पटवारी से) आप किसी मकसद से मास्टर या पोस्ट-मास्टर के पास तशरीफ लाये हो-भगवान के लिए इस बूढी पर रहम करे, गाव मे आप ही सब से बड़े है !

गोविंदशंकर—तुम अपना नाम बतलाओ ! वजह क्या जो काम छोड़कर यहां परोपकार का नाटक कर रहे हो ? भागो यहां से !

रेंजर—आप लोग परम अभागे नजर आते हैं !

[झगडा बढते देख डरी कस्तूरी ने रेंजर को रोका]

कस्तूरी—इन बातो मे क्या रक्खा है ! गगादीन भाई दवा लेकर आता ही होगा। हल्दी मैंने लगाही दी है जो इन गावों की रामबाण-औषधि है। इनसे तकरार मे कोई फायदा नहीं है।

दामोदर—ऐसी डोकरिया मरती रहे, ऐसे शिन्दे सरकार के बेकार जगली नौकर उन्हे बचाते—गले लगाते—रहे। मगर इस का एहसान हम पर क्यो. . . ?

गोविंदशंकर—हमने किसी बदतमीज का कर्ज़ नहीं खाया है। बल्कि सारी दुनिया हमारा ही धारती चली आ रही है . .

धनिकलाल—(तरफ ले) बाप-दादों से जनाब ?

रेंजर—मगर दुनिया मे तो यह पटवारी साहब भी हैं, क्या यह भी महादपुर के जमीन्दार के कर्जदार हैं ?

कस्तूरी—(स-भय बात टालना चाहती है) छोड़िये इस विषय को आप लोग ! अभी गगादीन भाई नहीं आया।

गोविन्दशंकर—(कस्तूरी की बात दबाने के लिए उच्चतर स्वर मे) मै कहता हू दुनिया ! अब कोई ऐरा-गैरा न भी हुआ तो उसकी क्या गिनती ?

रेंजर—पटवारी साहब का नाम मैंने यू लिया कि कानूनन पटवारी को जमीन्दारो से पैसे-वैसे का रिश्ता रखने का कोई हक नहीं है— 'पालिसी दरबार' के रू से।

दामोदर—(लाल) मै कहता हू बहुत पालिसी बघारोगे तो ठीक नही होगा। दामोदर पटवारी को मामूली आदमी न समझो। मेरे अडर के सारे जमींदार यू कापते हैं जैसे आधी में तिनके !

रेंजर—(गुस्ताख) दामोदर पटवारी के बारे मे इतना तो मैंने भी सुना है कि बाप के मर जाने के बाद एक साल तक ट्रेनिंग देकर राज्य ने उन्हे इस गॉव का पटवारी बनाया है, यो कि—दामोदर के बाप भी पटवारी थे। माफ करिये—जगली हू ? क्या कान तो छोटे-बड़े सभी के

दामोदर—लेकिन कुछ कान गोशमा

[पीछे खडे आदमियों में से एक लपकता है दामोदर का मुहँ करने मगर रेंजर के इशारे पर रुक जाता है]

२ आदमी—तमीज से बोलिए— गाली-गुफ्ता और हाथापाई की जरूरत ?

गोविंदशंकर—याद रहे ! तमीज छोड देने पर महादपुर गाव से कोई जीता-जागता जा नहीं पाता !

दामोदर—(अकड से) दिन-दहाडे ही मारकर खपा दिया जाता है ।

रेजर—(गभीर) अच्छा ! ऐसा भी गाव है ग्वालियर राज मे ? तभी इस गरीब मास्टर की आधी तनख्वाह भूट मे जाती है शायद और (कस्तूरी की तरफ देखकर) बेचारे की प्यारी इज्जत खतरे मे है !

कस्तूरी—(घबराकर रेजर को रोकती है) इन बातो से हमारा कोई फायदा नही !

रेजर—अपने गाव के पटवारी और जमीन्दार के मुहँ से ऐसे शब्द सुनकर मुझे लज्जा आती है ।

[दामोदर खीझकर एक तमाचा रेजर पर चलाता है मगर सावधान कस्तूरी बिजलीसी बीचमे आकर अपने गाल पर चपत ओज लेती है । इसके बाद दामोदरने रेजर की मजबूत भुजाओ और चौडी छाती को देखा और खाली हाथ उसके नजदीक जाने से डर वह बाम लेने को लपका जिस पर जरापूर्व बचपन से गगादीन ने धनिकलाल की पुरानी पगडी टाग दी थी । दामोदर के दुर्बल-हाथो का हल्का झटका पाते ही पगडी का एक तिकोनासा हिस्सा हाथो नीचे झूल पडा और एक-बार वह भगवा झडेसी शोभा पाने लगी]

कस्तूरी—(दामोदर से) अरे देखो तो ! तुम्हारे झटके मे

पगड़ी का झंडा बन गया ! अब उससे दूर रहो ! उसे नष्ट न करो !

[झंडे का विचार आते ही रेंजर और दूर पर खड़े सारे आदमी टोपी-पगड़ी छू, हाथ जोड़ कर उसे नमस्कार करते हैं]

रेंजर---धन्य है इस सूझ को ! बिलकुल झंडा अपना !! (दामोदर को उसकी तरफ़ सक्रोध बढ़ते देख) ओ-ए ! उसे अपमान से न छुओ !

[फिर भी पटवारी को बढ़ते देख पीछे खड़े कई आदमी झपटकर उसके दोनों हाथ पकड़ लेते हैं । इसी वक्त गवालियर सरकार की वर्दी में कई आदमियों के साथ दवा लिये गंगादीन दाखिल होता है]

१ सरदार—(रेंजर से) फिर भी हुज़ूर को यही भेस भाया !—जय हो महाराजाधिराज की !

२ सरदार—महल पर इस लड़के से खबर पाते ही हम सभी ताड़ गये फौरन कि मगर से लड़ने वाला रेंजर अपने आलीजाह बहादुर को छोड़ और कौन हो सकता है ?

कस्तूरी—भगवा झंडा की जय ! महाराज शिन्दे की जय !

सभी---महाराज माधवराव शिन्दे की जय !

[सभी झंडा-गान गाते हैं]

गान

भगवा झंडा भगवान क़सम
है शान हमारी ! शान क़सम !!
है जान हमारी जान क़सम ! भगवा झंडा !
श्रीरामदास सद्गुरु महान
का आनबान-मय यह निशान
जो शिवा छत्रपति के हाथों
ऊंचे उठ-उठ कर फिर झुका न
ऐसा कुछ है बल-खान क़सम ! भगवा झंडा !
इस झंडे के नीचे आकर
अनुराग-त्याग-मय बल पाकर
छेड़ते-छोड़ते नहीं समर
मर-मर कर फिर भी शूर अमर—
लेते जब मन मे ठान क़सम ! भगवा झंडा !
इसको महादजी ने ताना
जब तब दिल्ली तक ने माना।
परदेशी-देसी अकड़-बाज़
झुक-झुक कर सबने सन्माना।
सबसे महान पहचान—क़सम ! भगवा झंडा !

[झंडा-गान के बीच ही में रेजर की तरफ देख-देखकर दामोदर और गोविंदराव थर्रा-थर्रा उठते हैं। राजा की आहट लगते ही आहत होती हुई भी जानकी खिसककर दूर हट जाती है और घूंघट निकाल लेती है।

मास्टर धनिकलाल बार-बार आसू और चश्मा पोछता कच्चे ओसारे के कोने-कोने में दौड़कर राजा के लिये जैसे कोई आसन ढूढता है, मगर फटा टाट और फटी दरी के सिवा वहा कुछ नही। रेंजर इन बातो को ताड़ता है]

रेंजर—(धनिकलाल से) आप आसन-दरी के लिये क्यो हैरान होते है, मै यहाँ बैठने के लिये नहीं आया हू !

१ सरदार—(रेंजर-रूपी राजा से) सरकार पधारे ! पास ही मोटरमे सारा मामान

माधवमहाराज—(गभीर) अभी यहा मुझे कुछ काम और हैं। इस पटवारी और जमीदार से बाते करनी है, मास्टर का मामला मजे मे समझना है।

सरदार २—मगर हुजूर मोअल्ला ! पहले मरहम-पट्टी हाथ की हो ले तो बेहतर—पधारिये !

माधवमहाराज—ठीक है, मगर मुझ से ज्यादा तकलीफ उस बूढी को है—उसे भी साथ ले चलो !

[माधवमहाराज सरदारो के साथ जाते हैं। कई नौकर स्ट्रेचर लाकर उस जानकी को भी सुलाकर ले जाते है। इसी बीच मे गावँ के अनेक और वे गजेडी फिर से इकट्ठे हो जाते है]

१ ब्राह्मण—(धनिकलाल से) लो मास्टर ! अब तो ॥२ ८ हैं ! महाराज आगये तो तकदीर का पासा पलटाही समझो अब !

धनिकलाल— [गंभीर]

खुशी क्या खेत पर मेरे अगर सौ बार अब्र आये,
समझता हूं कि ढूंढे हैं अभी से बर्क़ ख़िर्मन को।

ब्राह्मण—मगर महाराज गये कहा? मै पूजा छोड़कर भागता आरहा हू राजा के दर्शनो को।

[इसी वक्त पाच-सात पटवारियों की टोली एक राज-अधिकारी के साथ आती नजर आती है]

दामोदर—(भीत, चकित, अर्ध-स्वगत) अरे! ये गाही-के-गाही पटवारी कहा मे पकड लाये गये!

१ गंजेड़ी—अजी पटवारी साहब! हमारे महाराज बहादुर नाक पर मक्खी नहीं भिनकने देते। वह पटवारियो की पडताल पर निकले है।

गोविंदशंकर—(धनिकलाल से) मास्टर साहब! भूल तो मुझ से भयानक हो गई; मगर सरकार आप से कुछ पूछे तो ऐसी कोई बात न कहियेगा कि मुझपर उनकी खफ़गी बढ जाय! आखिर हम-आप एक गाव के रहने वाले पडोसी !

धनिकलाल—नहीं भैया! अपन किसी की बुराई में कभी नहीं। उस्ताद ने लिखा है—

न सुने गर बुरा कहे कोई
न करे गर बुरा करे कोई
बख्श दे गर खता करे कोई

लेकिन रुपयो के बारे में अगर महाराज ने पूछा तो मै क्या कहूगा?

गोविंदशंकर——बाज आया मै रुपयो से !! [स्वगत] कैसी भयानक भूल होगई——राजा के मुहॅ पर आगया !

१ गंजेड़ी——अर्जी सरकार! आप किस राजा से कम है !

२ गंजेड़ी——आपके मुहॅ पर आकर बिना जमराज के घर गये कोई बचा है ?

गोविंदशंकर——चुपरहो ! क्या बकबक मचा रखी है तुम लोगो ने——भागो यहा से ! तुम्हे दूसरा कोई काम नही है ?

ग्रामवासी——हम अपने महाराज को जुहारने आये है। उनके दर्शन करने ।

दामोदर——(गोविंदशकर से धीरे) यह आपने महज गलती की जो राजा के सामने मजूर कर लिया कि मुझे भी कर्ज देते हैं।

गोविंदशंकर——अरे भाई ! मै क्या समझता था कि हमारे का, इस तरह से सब पर नजर रखते है। मैने तो जगली समझा ।

गंजेड़ी——मगर इसमे झूट क्या है या कानून के खिलाफ ही क्या है ? आप बडे जमीन्दार ये बडे पटवारी ! आपके

रुपये सूद पर चलते है—इनके नाम !

दामोदर—(सभय) किस दिन का बदला निकालते हो यारो ! (धीरे से) राजा के जाने के बाद तुम्हे भी जितने रुपयो की जरूरत हो मुझ से ले जाओ ! शोर न करो !

गंजेड़ी—शोर न करो—राजा को न सुनाओ—और रय्यत की चटनी बनने दो !

गोविंदशंकर—(सभय) ये नशेबाज लोग ! कहीं सरकार सुन न ले इनकी बाते !

[इसी वक्त फौजी-ड्रेस मे कई सरदारो के साथ महाराज माधवराव सिंधिया आलीजाह बहादुर तपाक से पधारते हैं और उनके आते ही चारों तरफ रोब और सन्नाटा छा जाता है। कस्तूरी और गंगादीन पुराने रेंजर को नयी पोशाक मे बहुत ध्यान से देखते हैं]

गंगादीन—(फुसफुसाकर) कैसा सच सपना बहन !

कस्तूरी—(बहुत धीरे) मै भी तो यही देख रही हू ।

गंगादीन—(फुसफुसाता) इसी पोशाक मे राजाको देखा था सचमुच !

[कस्तूरी कुछ कहना चाहती है मगर इसी वक्त महाराज सिंधिया की गंभीर आवाज मे उसके मुँह के शब्द किसी को सुनाई नही पडते]

माधवमहाराज—आठ दसों पटवारी और एक दामोदर नौ, सबको मेरे सामने हाजिर करो !

[सारे पटवारी सभय और कांपता दामोदर महाराज के सामने लाये गये। दामोदर मारे भय के रोने लगता है]

दामोदर—सरकार ! अन्नदाता !! मुझ से बड़ी भूल हुई। मैंने मालिक पर ज़बान और हाथ चलाया—मगर बिना जाने हुज़ूर !

माधवमहाराज—(गंभीर) रो मत दामोदर ! इंसाफ के वक्त रोते कायर हैं। ठीक है, तुमने राजा समझकर पिछली भूलें नहीं की थीं, मगर मैं पूछता हूं किस कवायद से मेरे राज का पटवारी मेरे जंगल के रखवाले को गालियां देने का हक रखता है—और मारने का ?

[इसी वक्त काला-कलूटा, दुबला, ग़रीब और झुका हुआ एक किसान आता है लकड़ी टेकता और दामोदर के सामने चांदी के कई गहने रखकर गिड़गिड़ाने लगता है]

ग़रीब—ये गहने लो और अपने आदमियों को रोको ! तुम्हारे रुपये के लिये वे मेरी बहू को पकड़े लिये जा रहे हैं।

माधवमहाराज—(एक सिपाही से) उस बूढ़े को दूर हटाओ ! (अर्ध-स्वगत) हे महाकाल ! ऐसे पटवारी तो मेरे राज्य का खात्मा कर देंगे। (दामोदर से) तुम्हारा लट्ठा, परकाल रोजनामचा, फील्ड-बुक और जरीब ये सब ठीक हैं ? कहां हैं ?

दामोदर—सब ठीक है सरकार और गुलाम के घर पर है।

माधवमहाराज—सारी चीजे ठीक है? सचसच बोलो, नहीं तो मैं अभी सिपाही भेजकर घर की तलाशी करता हूं।

गंजेड़ी—दोहाई धर्मावतार की! दामोदर के लट्ठे की जाच हो! जमीन्दार की तरफ से नाप कर इसने मेरे खेतको चौथाई कम कर दिया है।

माधवमहाराज—(एक अफसर से) फौरन दामोदर के घर की तलाशी लेकर देखा जाय और पटवारगीरी के जो कुछ भी असबाब मिले हाजिर किया जाय!

[दामोदर कांपता है, महाराज के इशारे पर एक अफ़सर दूसरे पटवारियो को पढकर राजकीय आर्डर सुनाता है]

अफ़सर पढ़ता है—

पटवारी क़स्बा मुंगावली ने हुजूर मोअल्ला की खिदमत मे वक्त इन्सपेक्शन जो फ़ेहरिस्त-मवेशियान पेश की वह ग़लत पाई गई। बाथिस दरियाफ्त करने पर कि ग़लती क्यों हुई? पटवारी ने जवाब दिया कि तादाद मवेशियान ज़मीन्दार के बयान के मुताबिक दर्ज़ कर ली गई चुनांचे डायरेक्टर साहब लेंडरेकार्ड्स् को हुक्म दिया गया कि इस पटवारी को बरख़ास्त किया जाय और गवालियर गज़ट मे मुश्तहर किया

जाय कि आयंदा इसको रियासत हाजा में नौकरी न मिले। (दूसरे पटवारी से)

संवत .. ..के दौरे मे हुजूर मोअल्ला को ज़ाहिर हुआ कि करड्जेताका पटवारी पैमाइश नहीं जानता। यह पटवारी जब अपने हल्के में एक या चंदरोज़ ठहरता है तो ज़मींदारों को अपनी खुराक़ के दाम नहीं देता है

(दरबार पॉलिसी जिल्द न ५ से)

[इसी वक्त तलाशीवाली पार्टी दामोदर के घर से लौटती है और महाराज के सामने दो-तीन लट्ठे, एक जरीब और दो-चार रजिस्टर पेश होते हैं]

अफ़सर—सरकार ! जाच करने पर दामोदर पटवारी के कई लट्ठे-कई नाप के निकले। कुछ असल से ढाई-ढाई तीन-तीन इच वडे और दूसरे उतने ही छोटे।

माधवमहाराज—(गभीर) समझता हू। तभी इस गाव से पैमाइश की शिकायतें वहुत आती है। खैर ! रेजर को मारने वाले, गरीब मास्टर के घर शादी की अकड मे आने वाले, ज़मीन्दार से मिलकर रय्यत को सताने वाले, हल्को मे लेन-देन ,ने वाले, सही रजिस्टर या औज़ार न रखने वाले, राज्य की मिहरबानी से पढाये गये- -हे ईश्वर !- -इस पटवारी का मामला मामूली नहीं मालूम पडता जो सरसरी मे जाचा जा सके ! (जरा ठहरते है)

अफसर—(बा-अदब) इर्शाद.

माधवमहाराज—इन सब लोगो को अब मेरे सामने शिवपुरी मे पेश करो। मास्टर धनिकलाल को, जमीन्दार गोविंदशंकर को, पटवारी दामोदर को।

अफ़सर (हाथ जोडे) जो हुक्म आलीजाह बाहादुर !

[महाराज मिलिट्री-ढग मे उठते हैं जिनके साथ ही सभी खडखड़ा कर खडे हो जाते हैं और पर्दा गिरता है।

पहला दृश्य

पहला अंक समाप्त



शिवपुरी

दूसरा अंक

दूसरा दृश्य

[शिवपुरी में बाण गंगा के किनारे बनी मातु श्री श्रीमत सख्याराजा की छतरी या विशाल समाधि-भवन। चारों तरफ बहुत बडा उद्यान, जिसमें सरदार, अमलदार, मराठे, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान, जागीरदार, इनामदार, ताल्लुकदार, गवलियर सिविलमिलिट्री के बडे-बडे अधिकारी सभी इधर उधर एक खामोश गति से चलते हुए नजर आते हैं, दूर पर मातु श्री की मूर्ति नजर आती है जिसको लोग साफ कर रहे हैं, नजदीक—पहले दृश्य वाला उज्जैन का वह नया कवि, गवालियर पुलीस के एक बडे अफसर से बातें करता नजर आता है]

कवि—(चकित) सरकार ने मुझे क्यों तलब किया—

अफसर—(गंभीर) सो तो मुझे मालूम नहीं, मगर बात कोई गंभीर नजर आती है (सामने छतरी में मूर्ति के पास माधवमहाराज आये और साफ करने वाले लोग उन्हें देखते ही हट गये। अफसर ने कवि को महाराज के सामने लाकर, पेश कर, मिलिटी-सलाम किया और वह लौट गया। अब माधवमहाराज ने कवि को सर से पॉव तक ध्यान से देखा और अपने जेब से एक कागज निकाल कर उनको दिखलाया।)

माधवमहाराज—(गभीर) यह पवाडा तुम्हारा लिखा हुआ है ?

कवि—(थर्राकर) यह सरकार के हाथ कैसे लगा ? मैंने तो इसे फेक दिया था।

माधवमहाराज—राज्य के बारे मे लिखे हुए एक-एक कागज पर राजा की नज़र रहती है। इस रचना के लिए आपको उचित पुरस्कार देने के लिए मैंने हुक्म दे दिया है।

[कवि का भय प्रसन्नता मे परिवर्तित]

कवि—सरकार उदार है और गरीबपरवर भी।

माधवमहाराज—(बहुत गभीर) मगर मेरा मकसद कुछ और है। कुल चौबीस रुपये महीने पानेवाले के तेरह रुपये मद मे ज़मीन्दार को दिये जाते है और बाकी बचे ग्यारह मे वह शख़्स एक विधवा का, एक अनाथ का और एक विवाह योग्य कन्या का ससार चलाता है—ग्यारह मे !!

कवि—(खिन्न) अन्नदाता ! ससार तो चलना ही है। वह अर्थ की कमी-बेशी से अपनी गति नही निश्चित करता है।

माधवमहाराज—(सतेज) मुझे फख्र है कि मास्टर धनिकलाल ऐसे तपके वनिक लोग मेरे राज्य मे हैं। ऐसो ही की बदौलत मामूली लोग परमात्मा के ज्यादा नजदीक पहुँच सकते

है जो आदर्श जीवन विताते है, मुझे तो उनका सारा परिवार कल्चर्ड मालूम पड़ा—असिल मानी मे ।

कवि—(विनय) अन्नदाता की निगाह तेज है सत्य की पहचान मे ।

माधवमहाराज—(सतेज) पहचान ! पटवारी दामोदर ने तो मुझपर आक्रमण तक कर दिया था;—मगर वह लड़की धनिकलाल की कविराज ! आपने उसे नही देखा ? क्या उसका नाम ?

कवि—(स्पष्ट) अन्नदाता ! वह धनिकलालजी की पोती है । है तो कहने को पोती मगर मास्टर उसे प्राणो की पूतरीसी पालता है —'कस्तूरी' ।

माधवमहाराज—वह लड़की निहायत शरीफ है । मै तो उसका एहसान ताजिन्दगी भूलने वाला नही जो उसने मेरे हिस्से का तमाचा अपने सुकुमार गाल पर झेल लिया । इसी बात पर मै उसे माग (रुकते है) क्या नहीं दे सकता ? उसने मेरी इज्जत बचाई । अच्छा कविराज एक काम करोगे ?

कवि—हुक्म अन्नदाता !

माधवमहाराज—(जीजा महाराज की मूर्ति की तरफ देखकर) चारो तरफ के गवय्ये और मेहमान एकत्र है । आज मैं

भी मातु-श्री के चरणों में खड़ा होकर एक गीत सुनाऊँगा—लिख दोगे ?

कवि—(प्रसन्नता को पीना-सा) सरकार मुझ से ऐसी हँसी तो न करें। श्रीमान् स्वयं श्रेष्ठ कवि और गायक हैं, मैं तो नौसिखिया-तुकबन्द, सरकार की जबान पर चढ़ने लायक भला मैं क्या अर्ज कर सकता हूँ।

माधवमहाराज—सुनिये भी ! मेहमान बहुत प्यारे हैं, उनकी मिजाजपुर्सी भी जरूरी है, नहीं तो मैं आपको तकलीफ नहीं देता। और इसी बहाने आपकी परीक्षा भी है आज ! मातु-श्री पर मेरी कितनी भक्ति है सो सभी जानते हैं—कोई गीत लिखिये, गज़ल लिखिए—मगर लिखिए अद्भुत रचना।

[इसी वक्त कई जागीरदार और सूबे आकर मुजरा करते हैं]

माधवमहाराज—(एक मुद्रा में गंभीर) आपसे मैं एक मामले पर जिक्र करता हूँ जिसको मैं बहुत इम्पार्टेण्ट समझता हूँ। मेरे जो ख्यालात और पालिसी है उनमें सभी मातहतान को ...कर देना चाहता हूँ। मैंने बार-बार कहा है कि मेरे लिए सब कौमें बराबर हैं इस लिए सब कौमों को रियासत की मुलाज़मत में बराबर मौका दिया जाना चाहिए। समझन-समझा आपने !

सूबा—(थर्राकर) हुक्म सरकार !

माधवमहाराज—(बहुत गंभीर) मैं मिसाल दे रहा था कि मान लीजिए कि मैं कौम का मरहठा हूँ और शिवपुर जिले का सूबा हूँ। अब अगर मैंने अपने सभी मातहत मरहठे भरती कर लिए तो मेरे तबदील होने पर वह सारा अमला बिखर जायगा। कुछ आदमी खुद चले जायँगे, कुछ आदमी मेरे साथ जाने की कोशिश करेंगे और जो नया सूबा आयेगा उसकी कोशिश अब यह शुरू होगी कि वह अपनी कौम के आदमी भरे। जब कौमियत के निस्बत मेरी यह पालिसी है कि सब को बराबर मौका मिले तो फिर आपको भी उसकी पाबन्दी रखना चाहिए। जो हेडआफ़डिपार्टमेण्ट ऐसा नहीं करते, वह कोताह-अन्देश हैं। (एक जागीरदार की तरफ मुखातिब) कहिए सरदार साहब ! मैंने जागीरदारों के बारे में कोई काम करने को आपसे कहा था !

जागीरदार—हुजूर मोअल्ला ने मुझे हुक्म दिया था कि राज्य के जागीरदारों की उन्नति के लिए कोई योजना

माधवमहाराज—(गंभीर) तजवीज तैयार करने को—ठीक ! याद तो है आपको। अक्सर जागीरदारों की हालत बहुत गिरी हुई है—उनके रहने को मकान नहीं, यहाँ तक कि खाने के लाले रहते हैं।

जागीरदार—(सकुचित) अभी तो मेरी योजना तैयार हो रही है—जल्द ही हुजूर मोअल्ला की खिदमत में

माधवमहाराज—(गंभीर) इतनी मंद-गति से काम नहीं चलेगा सरदार साहब! मेरे मनसे ऐसे जागीरदारों को अपनी जागीरों की जमीन अच्छी तरह कमाकर आबादी बढ़ानी चाहिए।

जागीरदार—(खुशामदी) सरकार ने बिलकुल सच फर्माया।

माधवमहाराज—(दृढ) लेकिन माफ कीजिए, मुझे तो आपकी जागीर से सैकड़ों शिकायतें आये दिन मिला करती हैं- जैसे क़ानून और क़ायदे के साथ माली बन्दोबस्त न होने से न तो कारतकारों और माफीदारों के हक मुकर्रर हुए हैं और नहीं लगानों की शरहें।

जागीरदार—(चुप)

माधवमहाराज—जनाब के इस काम का नतीजा यह निकला कि आज किसी के हल पर पाँच सेर नाज ले लिया गया तो कल किसी पुराने कारतकार से जमीन छीन कर दूसरे को दी गई।

जागीरदार—(धीरे) नादेहन्द और बदमाश कारतकारों साथ सख्ती बरती जाती है।

माधवमहाराज—फिर भी, यह तो 'आरजी तौर' पर आमदनी बढ़ाना हुआ। आपने कभी उन गरीबों की तरफ भी

ध्यान दिया जिनसे आमदनी मे 'मुस्तकिल बेशी' हो और कारतकार भी बर्बाद न हो।

जागीरदार—सरकार अकेले मैं ही तो हू नहीं, रियासत के सभी जागीरदार जिस तौर-तरीक़ से रैयत से पेश आते है .

माधवमहाराज—वह सौ मे सौबार गलत है। जागीरदारो का तरीका पुराना साहूकारी तरीका-सा है जिसमे आसामियो को चूसने से ही काम रहता है; ख्वाह वह मरे या जिए।

[स्पीच कानफरेन्स जागीरदारान १९१९]

जागीरदार—(धीरे) हुजूर मोअल्ला की राय मे जागीरों का रियासत से क्या ताल्लुक़ होना चाहिए ?

माधवमहाराज—साहबो! आपको मालूम होना चाहिए कि जागीर देने से जागीरी-हिस्सा रियासत से अलग किया जाना मक़सूद नहीं है, बल्कि जागीरे रियासत मे शामिल और उसका एक बडा कारआमद जुज है। फिर उन जागीरदारो को . .

जागीरदार २—(उत्सुक) हुक्म सरकार !

माधवमहाराज—जिन्हे औलाद नहीं होती, गोद-नशीनी के मामले मे ज्यादा देर न करना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि जो गोद लेना न चाहते हो वह जरूर ही ले, बल्कि गर्ज यह है कि जिन लोगो का इरादा गोद लेने का हो उन्हे पूरी तजवीज जल्द कर लेना चाहिए। जिससे कि वह पेचीदगिया

पैदा न हो जो अक्सर सूरतो मे पैदा होजाया करती है ।

जागीरदार--(चापलूस) बिलकुल बजा फर्माया हुज़ूर मोअल्लाने ।

माधवमहाराज--ऐसे मौके आते है कि आदमी बैठा का बैठा रह जाता है, ऐन वक्त पर जब लडका गोद लेना पडता है और खतोकिताबत मे फासले की वजह से बहुत देर लगती है तो गोद लेनेवाला तो दुनिया से चल देता है और मामला अधूरा होने की वजह से बाद मे दिक्कते उठाना पडती है ।

जागीरदार---फिर मुनासिब तरीका क्या है हुजूर !

माधवमहाराज---मुनासिब तरीका यह है कि व्यवस्था-पत्र लिखकर रजिस्टरी करा देना चाहिए और उसमे लिख देना चाहिए कि मेरे औलाद न हो तो अमुक शख्स को और औलाद हो तो उसे जागीरपर हक हासिल हो ।

जागीरदार---ऐसा ही होगा सरकार ! अब गोद-नशीनी के बारे मे सुस्ती--गलती हर्गिज़ न होगी ।

माधवमहाराज---साहबो ! आप मेरा मतलब अच्छी तरह समझ ले, मेरी गरज़ यह नहीं है कि अठारह बरस के साहब-ज़ादे और सत्रह बरस की साहबज़ादी, जिनकी शादी हुए एक साल हुआ है, वह भी औलाद का इन्तजार न करें किसी को गोद लेले ।

जागीरदार—हुज़ूर मौअल्ला दूर-अंदेश है।

माधवमहाराज—(गभीर) जमाने की हालत अजीब है। कही अर्थ का अनर्थ न समझा जाय।

[प्रोसीडिङ्ग कानफरन्स जागीरदार १७ नवम्बर १९२०]

[इसी वक्त सरपर मराठी पगडी धारण किए एक वैद्यजी को लेकर कोई भृत्य आता है जिन्हें देखते ही]

माधवमहाराज—आइए आयुर्वेदाचार्यजी! (गभीर) सुना आप विचित्र कविराज है जो नौकरी के वक्त के बाद मरीजो की फिक्र ही नही करते।

वैद्य—(परम चकित) अन्नदाता! मै मै मै

माधवमहाराज—अस्पताल मे काम करने का जो वक्त मुकर्रर है उनको पूरा करलेने के बाद डाक्टर, वैद्य या हकीम को यह नही समझ लेना चाहिए कि मै अपनी ड्यूटी से सुबुकदोश होगया। उसे तो चौबीसघण्टे रैयत के स्वास्थ के हित मे लगे रहना होगा। नई-नई तलाश, नए-नए शोधकर—परिणाम राजा के सामने पेश करना होगा। मै चीर-फाड के खिलाफ और जडी-बूटी आदि नेचरल ढग की दवा के पक्ष मे हूं।

वैद्य—इन जडी-बूटियो का पता, असिल मे, अन्नदाता,

फकीरों और वन-वासियों को अच्छा होता है।

माधवमहाराज—ऐसी जड़ी-बूटी के वाकिफकार उन्हे छिपाते बहुत है, जो बड़ी बदकिस्मती इस मुल्ककी है, लिहाजा दरियाफ्त करने मे बड़े टेक्ट की जरूरत है। फिर

वैद्य—हुक्म सरकार !

माधवमहाराज—हमेशा आप लोगो को पुराने और आजमूदा नुस्खो की तलाश मे रहना चाहिए। जैसे बाज मरहम ऐसे होते है कि जिनसे जख्मो का इलाज बगैर चीड़ा-फाड़ी की तकलीफ के हो जाता है।

सूबा—हुजूर मोअल्ला ने सादगी और कमखर्ची पर निगाह रखकर देशी जड़ी-बूटी की तरफ हमारा ध्यान खींचा है गरन।

माधवमहाराज—सस्ता और देशी तो ये दवाएँ होती ही है, इनके प्रचार मे एक फायदा और है। जो दवाएँ आज के डाक्टर काम मे लाते है वे ज्यादातर हिन्दुस्तान बाहर से आती है।

जागीरदार—ज्यादातर क्या सभी सरकार! कितनी जर्मन, अमेरिकन और इगलिश दवाएँ बाजारो मे बिकती हैं, चमकीली।

माधवमहाराज—अब अगर खुदा-न-ख्वास्ता किसी वजह से बाहर की दवाएँ हमारे मुल्क में न आसके या उनकी

मात्रा मे न आसके जितनी हमे जरूरी है—फिर उस सूरत मे वही हालत होनी है जैसे कि ब्रिजलोडिङ्ग बन्दूक बगैर कारतस के।

वैद्य—(चापलूस) क्या उपमा दी है हुजूर ने ! काबिले तारीफ !!

माधवमहाराज—फिर जब खुद हमारे मुल्क मे दवाओ का बेबहा खजाना मौजूद है तो कोई सबब नहीं कि हम उसकी तलाश न करे, फायदा न उठावे। ऐसी तो शर्म की बात होगी और हम पर वही मसल सादिक आयेगी कि लकीर के फकीर बने बैठे है। एन्टरप्राइज क्या चीज है, इससे तो हमारे मुल्क ने ताल्लुक ही नहीं रखा है।

[सूबा, जागीरदार सरदार मुजरा करते जाते हैं]

माधवमहाराज—(पुकारते है) कोई है ? कौन है !

(एक राज-सेवक आता है)

माधवमहाराज—अरे जरा नाना साहेब को तो बुलाना (इसी वक्त मिलिटरी-ड्रेस मे एक साहब आते है, जिन्हे देखते ही चमत्कार) लीजिए, बड़ी उम्र नाना साहब की ! नाम लेते ही नजर आये। नाना साहब ! देखा आपने मातुःश्री की छतरी के गरेयो का उमरट !

नाना—(विनम्र) जबरदस्त है सरकार ! जहा आप जैसे हरएक कला के पारखी हों वहा का फिर क्या कहना ।

माधवमहाराज—(मूर्ति को ध्यान मे देखकर) मगर नानाजी, इतने बड़े जल्से मे भी कुछ न कुछ कमी है ।

नाना—सरकार मजाक करते है ।

माधवमहाराज—(मूर्ति पर नजर टिकाए) मजाक नहीं नाना साहब, देखिए, आह ! मातु:श्री की आखो के नीचे गर्द जमी है । मूर्ति साफ करनेवालो ने ध्यान से सफाई नहीं की है ।

[माधव महाराज अपना कोट उतारते है मूर्ति को स्वय साफ करने की इच्छा से]

नाना—यह क्या हुजूर ! मै किए देता हू ।

माधवमहाराज—(नाना की आखो मे मचल देखकर) नाना साहब, यह तो आखो के नीचे की गर्द है, मातु:श्री के चरणों की धूल अपने सर के बालों मे रगड़-रगड़ कर साफ करने को सारी जिन्दगी मेरा मन पागल रहा है और रहेगा ।

[कोट नाना को दे, रूमाल ले महाराज मातु:श्री की मूर्ति अपने हाथों साफ करते है—बड़े भाव मे]

नाना—(मुग्ध) धन्य ! सरकार गोया आज भी मातु:श्री

को जीवित जानते है।

माधवमहाराज—(दृढ) जीवित है नाना साहब! सरासर जीवित है—आज भी मेरी अमर मातुःश्री! नहीं तो क्या मै एक मिनिट भी सास ले सकता? उन्हीं की कृपा से आज गवालियर-राज्य फूल, फल रहा है। यह कौन नहीं जानता कि उनकी आज्ञा बिना मैने कोई भी काम अजाम नहीं दिया। मा—मा! नानाजी

नाना—हुजूर!

माधवमहाराज—(परम-भावुक) यह मा शब्द भी कितना मीठा है जिसके स्मरण मात्र से हृदय जैसे गगाजल से नहा उठता है। शरीर गोया मदिर मे पहुँच जाता है। परमात्मा के आशीर्वाद से आदमी आच्छादित हो जाता है।

[सहसा एक सुनहरी परदा, नाना साहब, महाराज और मूर्ति पर पड जाता है। और अब सामने का उद्यान और चहल-पहल का सामान नजर आता है—शिदे-शाही पगडी और जामे में विविध लोग—स्वतंत्र पोशाकों में भी। एक मुसलमान और एक हिन्दू बात करते हुए आते हैं]

मुसलमान—हमारे हुजूर मोअल्ला!

हिन्दू—हमारे महाराजाधिराज!

दोनों—(एक स्वर मे) बे जोड है—अपनी मिसाल खुद आप है।

हिन्दू—प्रजा का तो बच्चे की तरह पालन करते है। टिकस या कर लेते भी है तो ऐसे जैसे रसिक भंवरा कमल से रस ले—बिना उसके मुह पर कलक अकित किए—सौंदर्य बिगाड़े बिना।

मुसलमान—हुजूर मोअल्ला को भेद-भाव तो बर्दाश्त ही नहीं। हिन्दू हो या मुसलमान एकभाव से दोनो को निभाते है। हिंदुस्तान मे मेरे-देखे ऐसा राज्य ग्वालियर ही है जो सदियो से बिना शोर मचाये हिन्दू-मुसलिम-एका भावना आरहा है।

हिन्दू—निःसन्देह! यहाँ की ताजियादारी ही देखिये। कैसा जुलूस, कैसी सवारी निकलती है!

मुसलमान—और खुद श्रीमत उसमे शामिल होते है। आलीजाह बहादुर हिन्दू-मुसलमान दोनो कौमो को अपनी दोनो आंखे मानते है। इस छतरी मे ही देखिए,—एक छोटी सी मसजिद बनवाना सरकार नहीं भूले। (सामने एक बड़ा दाढ़ी वाले को आते देख) वह दाढ़ी वाले बुजुर्ग कौन है?

हिन्दू—यहा से अब हटना चाहिए,—आप है पण्डित विष्णुदिगम्बरजी—भारी गायक! बी. ए. पास। इस वक्त सारे हिन्दुस्तान मे बी. ए. पास सगीत-शास्त्री आपही है।

[दोनो जाते है और कई शिष्यों के साथ लम्बा चोगा, दाढ़ी, दुपट्टा-धारी विष्णुदिगम्बरजी]

विष्णुदिगम्बर—(एक शिष्य से) मौका पाते ही आज मैं महाराज से आग्रह करूँगा कि गवालियर-राज्य मे सगीत की विशेष-रूप से शिक्षा दी जाय। माधव महाराज महान नरेश है, उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। आज भारत में ऐसे तीन भी और राजा होते तो देशीराज्यो का रग ही बदला नजर आता।

शिष्य—इस राज्य में कैसी सगीत-शिक्षा पर आप जोर देगे गुरुजी ?

विष्णुदिगम्बर—वैसी ही जैसी मैने बम्बई में चालू कर रखी है। स्वर-लिपियो की पुस्तके छाप, चार साल का पाठ्य-क्रम तैयार कर, उसी समय मे शिक्षार्थी को सगीत मे—वाद्य या गीत मे—पारगत कर देना, पूरा सगीत-शास्त्री बना देना।

शिष्य—गुरुजी ! ऐसे-ऐसे महाराजाओ की नजर होजाय तो फिर तो आनन्द आजाय इस कला की उन्नति मे।

विष्णुदिगम्बर—मैने बम्बई मे ही बाते कर इस बारे में महाराज को उत्सुक बना रखा है—फिर गवालियर तो सगीत-विद्या का पुराना पीठ है। मशहूर मियॉ तानसेन

शिष्य १—(आतुर) गवालियर ही के थे।

शिष्य २—सुना है उनकी मजारपर इमली का कोई भाड़ है ?

शिष्य ३—हॉ ! हॉ !! उसके पत्ते खाने से आदमी

अनायास ही गवैया बन जाता है।

विष्णुदिगम्बर—असत्य बात ! इमली के पत्ते मियाँ तानसेन का प्रसाद समझकर खाना दीगर बात है। गाना तो पहले ईश्वर की कृपा से और फिर अभ्यास से आता है और इन्हीं दोनो के आधार पर टिकना, फूलना, फलता है। केवल इमली के पत्ते से गाना आता तो आज ग्वालियर के बैल और गधे भी सुरीले सुनाई पडते।

शिष्य—(सभी) हा-हा-हा ! (हसते हुए आगे चलते जाते है)

[कई लोग और आते-जाते हैं, जिनमें हमारा ध्यान महादपुर के ज़मीन्दार गोविन्दशंकर और पटवारी दामोदर पर जाता है। दोनों बात करते हैं]

पटवारी—(दुष्ट धीरे) आपका भला इसी मे है कि उस लड़की की शादी मुझसे हो—आपके नालायक रामशंकर से नहीं।

गोविन्दशंकर—मुझे भय है—इस मसले को कहीं स्वय महाराज न निबटावे। फिर

पटवारी—आपकी बातें ! हमारी-आपकी शादी से महाराज को मतलब !

गोविन्दशंकर—सरकार बडे उदार है ! उस दिन तुमने

जो तमाचा चलाया और उस लड़की ने उसे अपने गालपर झेल लिया इससे महाराज उस पर दरियादिल हो उठे है। इस वक्त वह चाहेगी तो मेरे नालायक को झक मारकर उससे सम्बन्ध करना होगा।

पटवारी - चाहती है वह रामशंकर को ?

गोविन्दशंकर—सो तो भगवान जाने, लेकिन गाव की बूढ़ियो से विचार बदल डालने का संदेशा भेजा तो पता चला कि खानदानी-लड़की का पति तो केवल एक बार ही चुना जाता है। धनिकलाल का खानदान अपने विचारो मे बहुत दृढ है।

पटवारी—समझा ! मगर यह कस्तूरी मेरे मार्ग से उतरने वाली नही। आप बुरा न मानिएगा। मै आज ही जाकर ऐसा उपाय रचता हू कि यह शादी होने ही न पावे !

गोविंदशंकर—(गभीर) मगर रामशंकर नालायक होने पर भी मेरा पुत्र है। क्या षडयन्त्र तुम रचोगे ?

पटवारी—(तेज जाते) खून

[पटवारी के पीछे जमींदार भी तीव्र जाता है। इतने में कई सिपाही कुछ लोगों का पीछा करते नजर आते हैं—वे लोग और कोई नहीं वही मास्टर धनिकलाल, कस्तूरी और नगादीन हैं। वे बहुत मैले-कुचैले, भूखे प्यासे उदास मालूम पड़ते हैं—थोड़ी दौड़ के बाद आखिर कई सिपाही उन्हें घेर कर उनमें से एक को जरा दूर ले जा पूछ-ताछ करते है]

नो तमाचा चलाया और उस लड़के ने [illegible]
झेल लिया इसने महाराज उस पर [illegible]
इस वक्त वह चाहेगा तो मेरे नालायक को [illegible]
सम्बन्ध करना होगा।

अनायास ही गवैया बन जाता है।

विष्णुदिगम्बर—असत्य बात! इमली के पत्ते मियाँ तानसेन का प्रसाद समझकर खाना दीगर बात है। गाना तो पहले ईश्वर की कृपा से और फिर अभ्यास से आता है और इन्हीं दोनो के आधार पर टिकता, फूलता, फलता है। केवल इमली के पत्ते से गाना आता तो आज ग्वालियर के बैल और गधे भी सुरीले सुनाई पडते।

शिष्य—(सभी) हा-हा-हा! (हँसते हुए आगे चलते जाते है)

[कई लोग और आते-जाते हैं, जिनमें हमारा ध्यान महादेवपुर के ज़मीन्दार गोविन्दशंकर और पटवारी दामोदर पर जाता है। दोनो बात करते है]

पटवारी—(दुष्ट धीरे) आपका भला इसी में है कि उस लड़की की शादी मुझसे हो—आपके नालायक रामशंकर से नहीं।

गोविन्दशंकर—मुझे भय है—इस मसले को कहीं स्वयं महाराज न निबटावें। फिर?

पटवारी—आपकी बातें! हमारी-आपकी शादी से महाराज को मतलब!

गोविन्दशंकर—सरकार बडे उदार है! उस दिन तुमने

जो तमाचा चलाया और उस लड़की ने उसे अपने गालपर झेल लिया इससे महाराज उस पर दरियादिल हो उठे है। इस वक्त वह चाहेगी तो मेरे नालायक को झक मारकर उससे सम्बन्ध करना होगा।

पटवारी - चाहती है वह रामशकर को ?

गोविन्दशंकर—सो तो भगवान जाने, लेकिन गाव की बूढ़ियो से विचार बदल डालने का सदेशा भेजा तो पता चला कि खानदानी-लडकी का पति तो केवल एक बार ही चुना जाता है। धनिकलाल का खानदान अपने विचारो मे बहुत दृढ़ है।

पटवारी—समझा ! मगर यह कस्तूरी मेरे मग़ज से उतरने वाली नही। आप बुरा न मानिएगा। मै आज ही जाकर ऐसा उपाय रचता हू कि यह शादी होने ही न पावे !

गोविंदशंकर—(गभीर) मगर रामशकर नालायक होने पर भी मेरा पुत्र है। क्या षडयत्र तुम रचोगे ?

पटवारी—(तेज जाते) खून

[पटवारी के पीछे जमीन्दार भी तीव्र जाता है। इतने में कई सिपाही कुछ लोगों का पीछा करते नजर आते हैं—वे लोग और कोई नहीं वही मास्टर धनिकलाल, कस्तूरी और गगादीन है। वे बहुत मैले-कुचैले, भूखे-प्यासे, उदास मालूम पड़ते हैं—थोड़ी दौड के बाद आखिर कई सिपाही उन्हे घेर कर झाड़ी मे जरा दूर ले जा पूछ-ताछ करते हैं]

एक अफ़सर—(क्रोध से) पूछना न जाचना, बिगड़ैल बैल की तरह जहा हो वही सींग घुसेड़ना—कहा से आरहे हो तुम लोग ?

धनिकलाल—(चश्मा पोछता, आसू पोछता, करुण गभीर)

पूछते हैं वह कि 'ग़ालिब' कौन है ?
कोई बतलावे कि हम बतलायें क्या !

सिपाही १—अजी, गजल हम नहीं पूछते—पता पूछते है। क्या तुमने इस जगह को पागल-खाना समझ रखा है ?

सिपाही २—इतना भी नहीं मालूम कि यहा पर आज खास जलसा है। देश-विदेश के लोग न्योता दे देकर बुलाये गए है।

कस्तूरी—हम भी कुछ बिना बुलाये नहीं आये है।

गंगादीन—महाराजाधिराज हमे वैसे ही मजे मे जानते जैसे तुम अपनी नाक. .

सिपाही—अबे बदतमीज, दूँगा वह झापड़ कि होश ने आजायँगे। (धनिकलाल से) क्यों बुड्ढे ! यह तेरी मुन- टोली है क्या ?

धनिकलाल—(दार्शनिक)

न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली न सही।
इम्तहां और भी बाकी हो तो यह भी न सही।

सिपाही २—लड़की बातें बनाती है, लड़का चटपन चलाता है और बुड्ढा गाता है गजल ! अच्छी टोली है।

सिपाही ४—मुझे तो बेचारे भूखे-भिखारी दिखते है—अलग करो–देखना चाहे तो दूर से इन्हे भी देख लेने दो।

गंगादीन—(चचल) दूर की ऐसी-तैसी हम तो स्वय महाराज से मिलेगे।

कस्तूरी—(दृढ) सरकार हमे जानते है, जैसे मा-बाप बच्चे को।

गंगादीन—(तीव्र) और याद रहे हमारे दादाजी को सताओगे या जलील करोगे तो अन्नदाता तुम्हे हरगिज माफ न करेगे।

सिपाही १—किसी अफसर की नजर पडी तो तबेले की बला बन्दर के सर पड़ जायगी निकालो बदमाशो को !

सिपाही २—(दुष्टता) क्या कहा ! अफसर की नजर लड़ जायगी। (कस्तूरी की तरफ देखकर) !

सिपाही १—लड़ नहीं—पड़, मैने कहा

सिपाही ३—निकलो ! बाहर भागो !!

धनिकलाल—(करुण) माफ करो भाई ! हम भूखो चलकर—पैदल, बहुत दूर से आये है ।

सिपाही ३—पैदल बहुत दूर से चलकर, कोई मिहमान यहाँ आया ही नही । सभी अच्छी-अच्छी- सवारियो से पधारे है । यह राजो का जलसा, क्या जाने किस सपने मे तुम्हे निमत्रण मिला ?

[अब सभी सिपाही धक्के देकर उन्हे निकालते है, जिसपर धनिकलाल तो गभीर, मगर कस्तूरी और गगादीन चिल्ला पडते है]

दोनों—दुहाई है ! दुहाई है !! अन्नदाता की ।

गंगादीन—ये पागल दादाजी का अपमान कर रहे है ।

[इसी वक्त झपटे हुए माधवमहाराज आते है—पीछे अनेक अग-रक्षक सरदार वगैरह। देखते ही सिपाही सन्नाटे मे—अटेन्शन सलामी । धनिकलाल, कस्तूरी, गगादीन पहचान कर नमस्कार करते है]

माधवमहाराज—(गभीर) क्या मामला है ? ये तो मेरे २ । है । इन्हे बाहर कौन निकाल रहा था ?

[सारे सिपाही सन्नाटे मे—कस्तूरी, गगादीन प्रसन्न]

धनिकलाल—एक शेर है—

तू हुआ जल्वागर मुबारक हो !
रेज़िशे सिजद-ए जबीने नियाज़ .

माधवमहाराज—मास्टर धनिकलालजी, आपलोग इतने उदास क्यो ?

गंगादीन—(चचल) अन्नदाता ! दादाजी बिना खाये-पिये पैदल चलकर

माधवमहाराज—उज्जैन से शिवपुरी चले आये ? राजा के न्योते पर सिपाहियो के धक्के खाने को—अफसोस !

[अब तो सब लोग धनिकलालजी की टोली को इस नजर से देखने लगे गोया आसमान से फरिश्ते उतर आये हो ।]

माधवमहाराज—(बहुत गभीर) ईमानदार लोगो का कष्ट मुझसे देखा नही जाता । मेरा ख़्याल है थोडी देर पहले मैंने महादपुर के जमीन्दार और पटवारी को यहीं देखा था । बुलाओ उन्हे ? पहिले मास्टर के मामले का निबटारा होगा, फिर दीगर काम (दो-तीन आदमी दौडे)

[वहा से चलकर सारी पार्टी समाधि मदिर के निकट आती है, एक स्थान पर बहुत सी कुर्सिया है जिन पर सभी कायदे से बैठते हैं । सकुचित मास्टर को महाराज हिम्मत देते हैं—

माधवमहाराज—(उत्साहित) सकोच की कोई बात नही धनिकलालजी, आराम से तशरीफ रखिए (इशारे से गगादीन और कस्तूरी को भी बिठाते है, फिर खुद बैठकर) पटवारी जमीदार से तो मै निपट लूगा, लेकिन गोविन्दशकर

मुझे अजीब शख़्स नज़र आता है, क्या सचमुच पटवारी और ज़मीन्दार मिलकर सारे इलाके को सताते है ?

धनिकलाल—(विरक्त) अन्नदाता ! दूसरे के ऐब मुझ-जैसा नाक़िस भला किस आँख से देख सकता है, जब कि गोस्वामीजीने कहा है कि—

" जो करनी बूझिए हमारी
जनम कोटि लौं ओटि मरो "

गंगादीन—(बहुत चचल) अन्नदाता ! बिना पूछे बोलने को दादाजीने मुझे बारहा मना किया हे लेकिन आज चुप न रहूँ तो माफ किया जाय। अपनी दया, करुणा, तुलसीदास और गालिब से लिपटकर दादाजीने जो गति बना रखी है वह मुझसे तो बर्दाश्त नहीं होती। रहा दामोदर, सो उसे भी सरकार मामूली न जाने, जिस विधवा के साथ जमीन्दार का लड़का भाग आया है—शिवपुरी मे; वह पटवारी के रिश्ते की है। अंगुलियो , नाचने वाली.

माधवमहाराज—(प्रसन्न) लडका बहुत होशियार है ! किसका लडका है धनिकलालजी ?

धनिकलाल—(विरक्त) सो तो मुझे भी नहीं मालूम सरकार। उर्दू मजे में न जानने के सबब यह अपने को 'ला-वारिस' और मुझ बूढे को अपना 'वारिस' कहता है। जब

यह तीन साल का था, उज्जैन की एक यात्रा मे, मुझे भटकता रोता मिला था। मैने विचारा मेरे कोई नहीं! आँसू पोछता है! गोस्वामीजीने कहा है—"मेरो कोऊ कहूँ नाहिं चरन गहत हौं"

माधवमहाराज—(प्रसन्न) बहुत खूब।

धनिकलाल—फिर मैने पुलीस को सूचना दे, इसे पाल लिया। अब यह जरा पढ़-लिख कर समझदार होजाय तो समझूँ कि भगवान का भला काम हुआ—हजार बुरा होने पर भी—

माधवमहाराज--(चतुरता से गगादीन से) भले लड़के! आखिर दामोदर ने कस्तूरीबाई के वर को क्यो बिगाड़ा ? समझो तुमने मेरी बात ?

[कस्तूरी इशारे मे गगादीन को चुप रहने को कहती है मगर—]

गंगादीन —(पाजी) देखिए अन्नदाता, वह मेरी बहन मना कर रही है कि मै दामोदर की निन्दा आपसे न करूँ। ये लोग ऐसे ही है सरकार। मर जायँगे लेकिन किसी के विरुद्ध उफ भी न करेगे। मुझे तो आजी ने हुक्म दिया है।

माधवमहाराज—आजी! अच्छा समझा। वही बूढ़ी मा जिन पर नहीं किनारे जानवर ने—

गंगादीन—(प्रसन्न) हाँ-हाँ अन्नदाता, क्या जाने कैसे उन्हें गरीबपरवर-महाराज के दिल का पता लग गया है; सो

उन्होंने कहा मुझ से कि मै एक-एक बात सरकार को बिना पूछे भी सुनाऊँ। यह दुष्ट दामोदर मेरी बहन पर अच्छी नजर नहीं नहीं रखता—सौ की एक बात तो यह है।

माधवमहाराज— फिर वह विधवा जिसके साथ रामशंकर भाग आया है दामोदर की कौन है?

धनिकलाल— [गंगादीन की तरफ गंभीरता से देख राजासे] अन्नदाता उस्ताद गालिब ने क्या खूब कहा है

घर हमारा जो न रोते तो भी वीरां होता,
बहर गर बहर न होता तो बया बां होता।

गंगादीन—(ढीठ) उस लुगाई से पटवारी का बहुत दिनो से अयोग्य सम्बन्ध है अन्नदाता!

माधवमहाराज—खतरनाक है यह शख्स!

[सूबा के साथ जमींन्दार गोविन्दशंकर आता है]

माधवमहाराज—आओ गोविन्दशंकर! तुम्हारा वह हम-। दामोदर कहा है? और कुल-दीपक वह लड़का?

गोविन्दशंकर—(सभीत) अन्नदाता, रामशंकर को लाने ही के लिए दामोदर वहां गया है।

माधवमहाराज—(क्रुद्ध) और 'वह' कहां रहती है?

गोविन्दशंकर—(संदिग्ध) मै समझा नहीं अन्नदाता !

माधवमहाराज—(गंभीर) वही लुगाई या लेडी जिसके साथ आपका लायक आवारा बना है। पटवारी दामोदर की वह कौन होती है ?

गोविन्दशंकर—(चुप).

माधवमहाराज—सच-सच बोलो !

गोविन्दशंकर—(स्वीकारोक्ति) अन्नदाता, सब जानते है..

माधवमहाराज—फिर भी मै तुमसे सुनना चाहता हूँ।

गोविन्दशंकर—(हिम्मत कर) सरकार ! वह पटवारी की रखैल है ऐसा सभी कहते हैं, लेकिन लगती है वह दूर के रिश्ते मे बहन।

माधवमहाराज—शिव ! शिव !! शिव !!! इस पटवारी ने तो-लो नाम लेते ही शैतान हाजिर (दामोदर आता है) देखो दामोदर ! मै कहता हूँ तुम्हारे मामले का फ़ैसला तो होगा ही लेकिन उसके पहले उस नौजवान को अपने चगुल से छोड दो जिससे कस्तूरी की सगाई तय पायी है। कहा है वह ?

दामोदर—(दुष्ट) घण्टो तलाश करने पर भी सरकार ! गनेशकर का पता नही चला।

माधवमहाराज—(सदर्प) पता चलाना होगा—फ़ौरन।

अब कोई बात मुझसे छिपी नहीं है दामोदर ! तुम जैसे अफसर की वजह से आज राज की गर्दन झुकी हुई है । तुम्हे अपना फर्ज मालूम है ?

दामोदर—(थर्राता है) अन्नदाता !

माधवमहाराज—पटवारी–जिसका फर्ज है जमीन्दार और काश्तकारों को गैर कानूनी बातो से बचाना, उन्हे बताते रहना कि फलां बात तो कायदे-कानून के मुताबिक है और फलां बरखिलाफ । किस बात मे नफा है, किसमे नुकसान । यानी उसके फर्ज वैसे ही है जैसे सेक्रेटरी के । मसलन अगर अफसर कोई गलती करे तो सेक्रेटरी की ड्यूटी है की वह उसका ध्यान उस ओर दिलावे और गलती से बाज रक्खे । उसी तरह पटवारी को नायब तहसीलदार मौजा या जमीन्दार को सावधान रखना चाहिए ।

दामोदर—(शंकित) अन्नदाता !

माधवमहाराज—अब कस्तूरीबाई के ब्याह मे वर हा से अगर कोई विघ्न आया तो उसके लिए जिम्मेवार तुम ने जाओगे । अभी—उस छोकरे को हाजिर करो !

कस्तूरी—(उद्विग्न सकुचित) अन्नदाता की जय हो ! भगवान ने वैसा वरदान मेरे कपाल मे नहीं लिखा है—सरकार ! मै दादाजी की सेवा में संतुष्ट हूँ ।

धनिकलाल—

कहते हो न देंगे हम दिल अगर पड़ा पाया,
दिल कहाँ कि गुम कीजे हमने मुद्दुआ पाया।

[अब बदली निगाह से गोविन्दशकर दामोदर की तरफ देखता है]

गोविन्दशंकर—आपको उस नालायक़ का पता नहीं मालूम ?

दामोदर—मेरा विश्वास कीजिए। (धूर्त)

गोविन्दशंकर—विश्वास ! आपके किस रूप का ? इसका जो अभी महाराजा बहादुर के सामने है या उसका जो घंटों पहले आपने मुझे दिखाया—क्या कहकर क्या करने आप गये थे ? याद दिलाऊँ ?

[दामोदर आँखे मार-मारकर जमीन्दार को चुप करना चाहता है—व्यग्र।]

माधवमहाराज—क्या मामला है ? मेरी मौजूदगी मे तुम लोग ऐसी गुस्ताखाना बातचीत क्यो करते हो ? देखो, आखिर मै भी आदमी हूँ। फौरन बतलाओ, रामशकर कहा है ?

गोविन्दशकर—पटवारी साहब को सब मालूम है सरकार, मेरे गाँव की लुगाई इन्ही के हाथ की कठ-पुतली है और मेरा नालायक़ छोरा भी।

माधवमहाराज—रामशङ्कर को फौरन लओ, मैं खुद उसको समझकर सही राहपर लाऊँगा। आज खुशी का दिन—मैं उस अच्छी लड़की को भी खुश देखना चाहता हूँ जिसके सबब मेरे मुह की लाली है—कस्तूरीबाई.

कस्तूरी—(सविनय) अन्नदाता! खुशी सबके भाग मे विधाता सब दिन कहा लिखते हैं? क्या जाने क्यों, कब से, मुझे ऐसा लगता है कि अब मै कभी खुश होने वाली नहीं।

धनिकलाल—(आँसू पोछकर) हायरे!—

क्या लुत्फ़ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो!

माधवमहाराज—क्यो कस्तूरीबाई—मैं इतना बड़ा राजा होकर भी अगर तुम जैसी नेक-लड़की को खुश न कर सका, तो लानत है इस बलंदी पर, इस ताकत और राज्य पर। तुम्हें खुश होना ही पड़ेगा—मेरे हुक्म से!

धनिकलाल—(व्यग्र) हायरे हुक्म! जय हो अन्नदाता की!

गंगादीन—जय हो! (कस्तूरी से) लो, हुक्म से मरकारी तुम्हे खुश होना ही पड़ेगा! और न मानो मेरा कहना।

[इसी वक्त गवालियर-पुलीस का एकबड़ा अफसर आकर फौजी सलाम करता है]

माधवमहाराज—कोई खास खबर है क्या? नेहरू ता

। उड़ा-उड़ा-सा कैसा ?

अफ़सर—हुज़ूर मोअल्ला, महादपुर के जमींदार के लड़के ·मशकर ने एक औरत के पीछे उसके यार का खून किया है-स खुशी के मौके पर मै यह खबर देनेमे हिचक रहा था। ा.श, औरत और रामशकर थानेपर लाये गए है।

माधवमहाराज—(भौंचक) खून ! गोविन्दशकर के लड़के—कस्तूरी के खून

गोविन्दशंकर (तेजी से पटवारी पर टूटकर) मेरे लड़के ने नही, इस रात्तस ने किया होगा। क्यो रे ! अभी जो कहकर गया था राह से दूर करने को सो यही किया है ?

माधवमहाराज—(तीव्र) गोविन्दशकर ! मामला क्या है ?

गोविन्दशंकर—(उत्तेजित) सरकार ! सारी साजिश इसी बदमाश दामोदर की है। यह कस्तूरीबाई से खुद की सगाई चाहता है। पाजीने क्या जाने क्या षडयत्र रच (रोता है) मेरे बेटेको फासी लटकाने का इतजाम कर दिया है—सरकार वह बुरा है तो भी मेरा ही है।

धनिकलाल—

इटिह ओख पार करे, इटिग्रो वाह गरे परै
प्रभु सो गुदरि लिवर्‍यो हो।

कस्तूरी—(गभीर) मा दुर्गे ! तुम्हारी जय हो ! कैसे-कैसे संवाद ! कैसा वह सपना ! (महाराज की तरफ देखती है)

माधवमहाराज—घबराओ नहीं बाई, इतना सब होने पर भी अगर मै तुमको खुश न कर सका तो बात अफसोस की होगी । (अफसर से) पहले इस बदमाश पटवारी को पकड़कर थाने मे ले जाओ और समझो कि मामला क्या है । साथ ही, उस रामशकर को हिरासत बाहर कर अपने साथ यहा लेकर आओ ।

[अफ़सर पटवारी दामोदर की गरदन पकड बर्माट लेजाता है, माथही नाना साहब और कई जागीरदार आते है]

धनिकलाल—(आँसू पोछता, पटवारी को देखता)

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहिए
हुआ रकीब तो हो नामावर है क्या कहिए ।

माधवमहाराज—(समझकर) आप तो सूफी है पूरे ! (नाना से) नानाजी ! अभी हम लोग हाथ मे खाना तैयार करेगे, आपको क्या-क्या पकाना आता है ?

नाना—(घबराए) मला काही एक करता येत नाही, मी खाता मात्र येते (मुझे कुछ भी बनाना नहीं आता, केवल खाना जानता हूँ ।)

माधवमहाराज—(प्रसन्न) ज्याला काही करता येत

नसेल, त्याला जेवणास काहीं एक मिळणार नाहीं, उपाशी रहावें लागेल। असा आमचा कायदा आहे। (जिसे कुछ भी बनाना नहीं आता उसे खाना भी कुछ नहीं मिलता और उपवास करना पड़ता है। हमारा ऐसा ही कायदा है।)

१ जागीरदार—सरकार ! इस वक्त आपकी यह मरजी कुछ अजीब मालूम पड़ती है और बे-वक्त !

माधवमहाराज—मजाक नहीं, मैं भूखा हूँ ...

नाना—मगर सरकार ने तो अभी थोड़ा ही पहले भोजन पाया था।

माधवमहाराज—(गभीर) फिर भी, मैं भूखा हूँ। ऐसा लगता है, जैसा कई दिनों तक खाना नसीब न होने पर ! अनड़ियाँ ऐंठी जा रही हैं ! (सेवकों से) खाना बनाने का सारा सामान फौरन!—और यहां केवल चुने हुए अमलदार, सरदार, जागीरदार भोजन बनाने को रहें और रहें मेरे मिहमान बुजुर्ग मास्टर धनिकलालजी, नेक कस्तूरीबाई और—(महाराज कुछ सोचते हैं)

गंगादीन—(चचल) और गंगादीन अन्नदाता !!

माधवमहाराज—(हंसकर) और गंगादीन ! नाम मैं भूल रहा था।

[नौकर-चाकर खाना-सीने के बर्तन-सामान लाते हैं—]

कस्तूरी—(गंभीर) मां दुर्गे ! तुम्हारी जय हो ! कैसे-कैसे संवाद ! कैसा वह सपना ! (महाराज की तरफ देखती है)

माधवमहाराज—घबराओ नहीं बाई, इतना सब होने पर भी अगर मैं तुमको खुश न कर सका तो बात अफसोस की होगी। (अफसर से) पहले इस बदमाश पटवारी को पकड़कर थाने में ले जाओ और समझो कि मामला क्या है। साथ ही, उस रामशंकर को हिरासत बाहर कर अपने साथ यहां लेकर आओ।

[अफसर पटवारी दामोदर की गरदन पकड घसीट लेजाता है, साथही नाना साहब और कई जागीरदार आते हैं]

धनिकलाल—(आँसू पोछता, पटवारी को देखता)

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहिए
हुआ रकीब तो हो नामावर है क्या कहिए।

माधवमहाराज—(समझकर) आप तो सूफी हैं पूरे ! (नाना से) नानाजी ! अभी हम लोग हाथ से खाना तैयार करेंगे, आपको क्या-क्या पकाना आता है ?

नाना—(घबराए) मला काहीं एक करता येत नाहीं, परन्तु खाता मात्र येते (मुझे कुछ भी बनाना नहीं आता; केवल खाना जानता हूँ।)

माधवमहाराज—(प्रसन्न) ज्याला काहीं करता येत

नसेल, त्याला जेवणास काहीं एक मिळणार नाहीं, उपाशी रहावें लागेल। असा आमचा कायदा आहे। (जिसे कुछ भी बनाना नहीं आता उसे खाना भी कुछ नहीं मिलता और उपवास करना पड़ता है। हमारा ऐसा ही कायदा है।)

१ जागिरदार–सरकार ! इस वक्त आपकी यह मरजी कुछ अजीब मालूम पड़ती है और बे-वक्त !

माधवमहाराज––मज़ाक नहीं, मैं भूखा हूँ. ..

नाना —मगर सरकार ने तो अभी थोड़ा ही पहले भोजन पाया था।

माधवमहाराज—(गंभीर) फिर भी, मैं भूखा हूँ। ऐसा लगता है, जैसा कई दिनो तक खाना नसीब न होने पर ! अंतड़ियाँ ऐंठी जा रही है ! (सेवकों से) खाना बनाने का सारा सामान फौरन!—और यहा केवल चुने हुए अमलदार, सरदार, जागीरदार भोजन बनाने को रहें और रहे मेरे मिहमान बुजुर्ग मास्टर रतिरामलालजी, नेक कस्तूरीबाई और–(महाराज कुछ सोचते हैं)

गंगादीन––(चंचल) और गंगादीन अन्नदाता !!

माधवमहाराज—(हसकर) और गंगादीन ! नाम मैं भूल रहा था।

[नौकर-चाकर खाना-खाने के बर्तन-सामान लाते हैं—]

नाना—क्या-क्या बनेगा अन्नदाता ?

माधवमहाराज—५६नों प्रकार। जिसे जो तैयार कर सके, करे। मै खुद मुर्ग़ का पुलाव बनाऊँगा, बकरे का कलिया और घास का मुरब्बा।

नाना—सरकार घास ऐसी रूखी चीज का भी मुरब्बा कर सकते है—मीठा; वाह !

[सेवक सामान ला-लाकर एकत्र करते, सिगड़िया, स्टोव और चूल्हे बलते, सब्जिया कटती, मास में मसाले लगते, और लोग तरह तरह की चीजें तैयार करते हैं—स्वय महाराज की मदद में नाना साहब]

धनिकलाल—(मिन्नत) सरकार हमे भी कुछ हुक्म हो ! गुलाम बैठे रहे और अन्नदाता काम करे यह क्या शोभा की बात है ?

माधवमहाराज—यों नही मास्टर। असिलमे मेरे ही नही सारे राज्य के अन्नदाता आप लोग है; ईमानदार प्रजाजन और किसान। धर्म ही के बल पर दुनिया टिकी है, ऐसा मेरा अनुभव से जाना विश्वास है। आपकी मिहनत की रोटिया तो न हमेशा ही खाते है—एक दिन तो आप हमारी मिहनत ी खाय।

[नाना साहब चूल्हा फूकते-फूकते हैरान। उनकी दुर्दशा पर महाराज ८ प्रसन्न।]

माधवमहाराज—नानाजी ! इन्ही मास्टर साहब की चर्चा मैंने

ापसे की थी ।

नाना—सच कहता हूँ सरकार, ऐसे भलेमानस को देखकर जी खुश हो गया।

माधवमहाराज—महादपुर गाव के यह मास्टर और पोस्ट-मास्टर—जिस पर यह उम्र—कहीं कोई विलायती आदमी मेरी रियासत की यह तस्वीर देखले तो एक किताब ही लिख मरे ।

नाना—सरकार महादपुर के स्कूल को बड़ा करना चाहते है मालूम पड़ता है ।

माधवमहाराज—(मसाला भूनते) हरगिज नहीं, असिल मे स्कूल-कालिजों की कोरी पढ़ाई को मै पसन्द नहीं करता—नफरत की नजर से देखता हूँ ।

नाना—फिर श्रीमान किस तरह की शिक्षा के पक्ष में हैं ?

माधवमहाराज—वैसी शिक्षा जिससे आदमी दस्तकारी-कारीगरी कुछ जाने । केवल कविता और कहानी से न तो शिक्षितों का पेट भरता है और नहीं समाज या राष्ट्र का भला हो सकता है ।

नाना—सरकार ने बिलकुल सही फरमाया

माधवमहाराज—जिस उम्र के हमारे नौजवान बी. ए., एम. ए. हो-हो कर—हाथ मे अर्जी, मुह में कोट्स-बायरन-शेली और सिरमें भिन-भिनाती मक्खियां लिए घूमते नजर आते हैं—

बेकार, बे-तेज---उसी उम्र मे विलायतवाले तरुण या नौजवान आसमान के सितारे तोड़ा करते है।

नाना---(फड़ककर) बिलकुल बजा फरमाया सरकार ने..

माधवमहाराज---इस लिटररी-शिक्षा का परिणाम दिमाग मे महल, पेट मे चूहे। जिसे देखो वही एक कॉपी बुक में गीत या तुक बंदिया घसीटे बिना जमीन पर पॉव धेर सरपट भागा जा रहा है। मगर जरा उन कवि महाराज को तो बुलाओ।

[एक सिपाही दौड़ा जाता है। पकवान तैयार हो जाते हैं और अब बड़े-बड़े थालों मे परोसे जा रहे हैं। स्वय माधवमहाराज की निगरानी मे कई थाल सज रहे हैं]

माधवमहाराज---(सभक्ति) यह थाल मातुःश्री के लिए भोग-नैवेद्य और यह दोनो महारानियो के वास्ते अब आप सब लोग बैठ जायँ।

[सभी निश्चित आसनो पर बैठ जाते हैं। माधवमहाराज अपनी जगह ` ` हैं जो कि बडे-बड़े सरदारों के बीच मे दिखलाई पड़ती है---ऊँची]

माधवमहाराज---माफ किया जाय, मेरी जगह मास्टर निक॰ . की बगल मे है। मेरा पाटा वहीं पड़े। प्रजा ही मेरी अन्नदाता है और मै अपने अन्नदाता के निकट भोजन करना चाहता हूँ।

नाना—सरकार !

माधवमहाराज—(सजल) ये गरीब-ईमानदार मेरे आर्डर पर सपरिवार उज्जैन से पैदलचलकर शिवपुरी आये है। भूखे, प्यासे। मैं पूछता हूँ अगर राजा प्रत्येक प्रजा का सर-परस्त है तो इनकी ये मुसीबतें किसके माथे जायँगी ?

[कवि आता है और अब धनिकलाल दाहने, कवि बाएँ, बीच में माधवमहाराज—धनिकलाल के निकट कस्तूरी, गंगादीन और फिर बड़े-बड़े जागीरदार, सरदार, भोजन पाने लगे। दूर पर छतरी के अंदर से किसी गायिका के कोमल-कंठ से ग्वालियर-राज्य की प्रशंसा का एक गीत सुनाई पड़ता है।]

गीत

आइए, आपको दिखलाएँ
इस महा-राज की सीमाएँ
(ग्वालियर-राज की सीमाएँ)—आइए !
पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण
ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ
ग्वालियर-राज्य की सीमाएँ—आइए !
बेतवा, पार्वती, शिप्रा कल
माही, जो मुक्त सिन्धु में मिल
वह नदी-रत्न—चंबल उज्ज्वल
सतपुड़ा, अरावलि, विन्ध्याचल

ऐसे पहाड़ ! ये सरिताएँ—आइए !
दशपुर, विदिशा और अवन्ती
जिनकी इतिहासों में गिन्ती
यहीं मध्य-रेखा भू-मण्डल
जगमग जग ने देखा मंगल
चौ-मुख चमकीली चर्चाएँ—आइए !
सान्दीपन मुनि सुयश सुवासित
आर्यभट्ट, वाराहमिहिर-युत
बौद्ध महाकात्याय शोभित
कालिदास कवि गीत गुञ्जरित
ग्वालियर-राज की गाथाएँ—आइए !
वह शकारि विक्रम भी बे-शक
विश्व-विदित साका संस्थापक
बने इसी ज़मीन पर सुन्दर
हुए इसी असीम में व्यापक !
जग-प्रिय अशोक की आशाएँ—आइए !
भव्य भर्तृहरि—क्या वैरागी !
कैसे तानसेन वह रागी !
श्रीमहादजी सैनिक, त्यागी
कर्तव्यगारीमे बड़-भागी !
हिन्दू स्वराज्य की ज्वालाएँ—आइए !
अब भी सो नरेन्द्र जो तपने
'पाटिलबाबा' के-से सपने

देख कौन आया रे सपने
हमसे पूछो तो हम अपने
'मोतीवाले' को बतलाएँ—आइए !

[भोजन जबतक चलता है, जल तरग और सारंगी, मृदग पर उक्त गान सुनाई पडता है, उत्साहक-राग मे। खाना समाप्त होते ही]

माधवमहाराज—(नाना से) अब हम मातुःश्री की सेवा मे चले—(कवि से) आपने रचना की जनाब ?

कवि—(प्रसन्न) हाजिर है—सरकार, जो कुछ भी बन पड़ा

[माधवमहाराज छतरी की तरफ बढते—महाराज के पधारते ही सभी उठकर मुजरा करते—फिर, हाथ मे तबूरा लेकर मूर्ति को नमस्कार कर महाराज कवि-लिखित गीत गाते हैं—]

गीत

दिया है जिसने सुन्दर-तन
दिया है जिसने मोहक-मन
अचेतन को जिसने चेतन
किया है देकर निज-जीवन
नमन मैं तो मन से सौ-बार
करूँ मातु:श्री का वन्दन !
दिया है जिसने सब—तन, मन !!

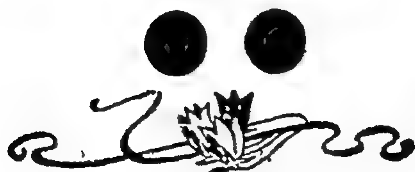
× × ×

विश्व का वह वसन्त मोहन !
मञ्जरित, पुष्पित, शुभ, शोभन
गुञ्जरित होते कैसे अपन
माँ, तू सुत-हित यदि करती तपन ?
अचेतन को जिसने चेतन—
किया है देकर निज जीवन !
नमन मैं तो मन से सौ-बार
करूँ मातुःश्री का वन्दन !

[माधव महाराजने भाव विभोर अद्‌भुत गाया ऐसा कि एकत्र कलावन्त रससे झूम पड़े !]

दूसरा दृश्य

दूसरा अंक समाप्त





लश्कर ...



तीसरा अंक

तीसरा दृश्य

[लश्कर में किंगजार्ज-पार्क में गोपाल-मन्दिर के सामने पहले दृश्य के दो गंजेडी नज़र आते हैं]

१ गंजेड़ी—(व्यग्र) अरे यार केवल चिलम की कसर है, नहीं तो गाजा, तम्बाकू साफी सब कुछ तैयार है।

२ गंजेड़ी—(व्यग्य हसी) इसी को कहते है कि चले रहे हरि भजन को ओटन लगे कपास ....

१ गंजेड़ी—मगर मास्टर धनिकलाल का कहीं पता भी तो चले

[दूर पर उ[illegible]नवाला कवि नजर आता है इधर ही आता .]

२ गंजेड़ी—(देख कर) पहचाना ! अब मास्टर का पता लग जायगा—क्यों कि उनके दोस्त यह कवि भी—याद है उस पचाईवाला किस्सा !

१ गंजेड़ी—(आश्चर्य) लेकिन आज कल कैसा फूला हुआ है यह कवि !

२ गंजेड़ी—अरे फूले भी तो आखिर क्यों नहीं ! उस

पवाँडे पर महाराज ने हजारों रुपये पुरस्कार दिये और फिर लश्कर में ही—अपने पास—नौकर रख लिया है। अब यह न फूलेगा तो कौन.

१ गंजेड़ी—जरा पुकार कर पूछ कि आख़िर मास्टर साहब का भी कहीं पता है?—अजी कवि महाराज!

कवि—(आकर्षित) क्या है? तुम लोग कौन?

१ गंजेड़ी—(व्यग्य) हम महाराज, महादपुर के रहने वाले है—उस दिन हमारे ही सामने आपका पावाँड़ा मास्टर साहब ने फेंकवा दिया था .

२ गंजेड़ी—(आश्चर्य से) मगर आजकल आप बहुत तगड़े हो रहे है। खादी के फटे कुरते की जगह रेशम का कोट डटा है, रूखे केशो की जगह सुथरे-सवरे केश नजर आ रहे है—सच कहू तो मैने तो आपको पहचानाही नहीं।

१ गंजेड़ी—अरे इन बालो मे क्या रखा है—धन का कमीन और नीचे पर अधिक होता है—मसलन थैली और जोरी—थैली मेरी नजर मे कमीन है—हल्की, नरम और ` । शरीफ़ वजनी और कड़ा। अब थैली मे रुपया आते ही फूल उठती है—पहचानी नहीं जाती। इधर तिजोरी मे ये हो या रत्न वह ज्यो-की-त्यो सहज बनी रहती है।

कवि—(गभीर-मुद्रा) देखता हूँ उज्जैन के गजेड़ी भी

कविता करते हैं—— भाई बला से गाली तुमने मुझे दी पर युक्ति तुम्हारी लाख रुपये की है। धनका कु-प्रभाव कमीनो पर ही पड़ता है।

२ **गंजेड़ी**——(सन्दिग्ध) लीजिये अब तो आप स्वतः अपने को लपेट चले—इसे कहते हैं कवि—अपने बारेमें भी कहने से न चूके

१ **गंजेड़ी**——(गम्भीर) इतना तो मैं भी जानता हूँ—— कहा है—

> वैद, चितेरा, जोतिसी, हरकारा और कव्व
> इनको नरक ज़रूर है औरन को जब तब्ब

कवि——(प्रसन्न) और कहा है कविता में ! याने कवि द्वारा। बस तुम्हारे दोहे से मेरी स्थिति साफ हो गयी। क्या तुम बिना वैद्य के मुँह से सुन सकते हो कि वह नारकी है? या चित्रकार, जोतिषी, हरकारे ही से? यह अगूरी-जोश तो कविमें ही होता है कि सच को ज्यों-का-त्यों उघाड़कर रख दे——इस लिये मित्रो! कवि ही उस दोहे में नारकी नहीं है, क्योंकि उसने सत्य को स्वीकार किया है। तुम लोग उज्जैन से लरकर क्यों आये?

१ **गंजेड़ी**—— तुम्हें नहीं मालूम है और (दूसरे गंजेड़ी

दिखा) यह मेरा जिगरी यार है। मैं आया हूँ लुगाई को
ने, यह आया है मेरे काम में मदद देने—मगर उन बूढ़े
ास्टर के बारे मे कुछ सुना आपने ?

कवि—(उत्सुक) नहीं तो खैरियत तो है ?

२ गंजेड़ी—कहाँ साहब ! पिछले हफ्तेभरसे उनकी
पोती, वह और गगादीन महादपुर मे गायब है

कवि—(हैरान) गायब है—कस्तूरी कस्तूरी की तो
शादी होने वाली थी न गोविन्दशकर के लड़के मे—महाराज
की विशेष इच्छा से ?

१ गंजेड़ी—उसी रग में तो भग पड़ गया—शादी
के ऐन दिन एक औरत ने जमीन्दार के लड़के का कत्ल
कर दिया।

कवि—औरत ने—कस्तूरी के पति की हत्या कर डाली ?

२ गंजेड़ी—उन दोनो का पहले ही से रिश्ता बंधा था।

१ गंजेड़ी—यहाँ तक कि शिवपुरी मे जब उस लुगाईने
र किया तो रामशकर ने उसे रश्क के मारे जान से मार डाला था।

कवि—हॉ-हॉ, कस्तूरी के प्रसन्नतार्थ उसी खून से तो
उसे सरकार ने बख्श दिया था

२ गंजेड़ी—मगर कस्तूरी के भाग मे उस अभागे से

सम्बन्ध लिखा ही नहीं था।

कवि—ऐसीही जगहो पर भाग्य को नमस्कार करना पड़ता है। ओह ! सरकार सुनेंगे यह खबर तो उन्हे बहुत ही सदमा होगा।

१ गंजेड़ी—राज्य मे बार-बार खून होना राजा के लिये सदमे की नहीं तो और क्या बात है ?

कवि—खून पर तो होगा ही—सरकार बहादुर रंज होंगे उस कस्तूरी के लिए—जिसे हजार उपाय करने पर भी वह खुश न कर सके।

२ गंजेड़ी—मुझे ऐसा पता है कि रामशङ्कर के खून के बाद कस्तूरी महाराज से मिलने को महादपुर या उज्जैन से लश्कर आई है।

१ गंजेड़ी—वह मास्टर धनिकलाल के नाम एक खत छोड़ गई थी जिसे पढ़ते ही वह बूढ़ा सब कुछ छोड़कर ऐसे भागा जैसे मौत का वारण्ट मिलने पर जीव

कवि—(व्यग्र) ज़रा सरकार की टोह लूँ तो मास्टर या कस्तूरी का पता चले—सुना है, थियासॉफिकल-लॉज मे एक महान थियासॉफिस्ट का भाषण सुनने आज दिन के तीन बजे श्रीमान पधारने वाले है। तुम लोग मेरे साथ आओ —कुछ न कुछ पता लगाते है—अभी।

दोनों—चलिए !

[तीनों जाते हैं और दूसरी तरफ से माधवमहाराज रामजीदास वैश्य के साथ बातें करते आते हैं—]

माधवमहाराज—(गंभीर) मैं शिक्षा-प्रचार मे धन लगाना रोज़गार मे 'इनवेस्टमेन्ट' मानता हूँ और नतीजा मुनाफे के रूप मे देखना चाहता हूँ न कि रिपोर्ट-रूप में। इसी लिए मास्टर धनिकलाल के गाँव का स्कूल 'मिडिल' या 'हाई' न कर मैं 'मैनुअल' कर देना चाहता हूँ....

रामजीदास—(नम्र) उसमें मेज़-कुर्सियाँ ही बनाना सिखाया जायगा या और भी कुछ ?

माधवमहाराज—मेज़-कुर्सियाँ बनाना, बुक-बाइडिंग, चीनी के बर्त्तन तैयार करना—कंपोज़ करना...

रामजीदास—(साश्चर्य) कंपोज़ करना भी सरकार !

माधवमहाराज—क्यों नहीं। मुझे मालूम है कि बी. ए. पास दैनिक-पत्र के अनुवादक से कंपोजीटर अधिक आसानी और इज्ज़त के साथ चार रुपये माह ज्यादा ही कमा लेता है। क्यों रामजीदास ! अब तो वे नेक गरीब खुश होंगे—मास्टर का कर्ज मैंने अपनी जेब से भर दिया—घर-बैठे पचास रुपये मासिक तनख्वाह कर दी—जमींदार के लड़के को फाँसी से

बचाकर कस्तूरी की प्रसन्नता का पथ विस्तृत कर दिया—मैं समझता हूँ—अब वे जरूर खुश होगें।

रामजीदास—बशर्ते कि जमीन्दार उन्हें सुख से रहने दे।

माधवमहाराज—पटवारी पर मुकदमा चल रहा है और महादपुर का वह अफसर बदल दिया गया है—मेरे ख़याल से गोविन्दशंकर अब समझ से काम लेगा—

रामजीदास—मैं समझा नहीं सरकार !

माधवमहाराज—याने जमीन्दारों को अपने को राज का मुलाजिम शुमार होना चाहिए न कि मालिक। मैं तो कहता हूँ जागीरदारों की भी मौजूदा हालत एक जमीन्दार के तौर पर है न कि जागीरदार के तौर पर। इधर गोविन्दशंकर ऐसे जमीन्दार खुदमुख्तार जागीरदारों की नकल करते हैं।

रामजीदास—यह सरासर भूल है उनकी

माधवमहाराज—जागीरदार और जमीन्दार की हालत में क्या फ़र्क है ? इसको अभी दोनोंने नहीं समझा है। ये दोनों फिरके अपने मुख्य कर्त्तव्यों से बेखबर हैं। अलबत्ता यह एक फ़र्ज़ दोनों ने जरूर समझ लिया है कि रिआया को मुफलिस बनाये रक्खो—ख़ैर, रामजीदास, अब तो वे खुश होंगे न ?

रामजीदास—सरकार जानते हैं—खुशी तो जिसे ईश्वर दे उसे हासिल होती है। हुज़ूर, बहुत दिनों से मैं एक बात

पूछते-पूछते रह जाता हूँ

माधवमहाराज—शौक से पूछिये। क्या बात है?

रामजीदास—सरकार, इस घुड़दौड़ को जारी करने से अपने को क्या फायदा, इसे बन्द क्यों न कर दिया जाय—देखिये, आज सरकार भी हारे और अक्सर लोगों को भी खोते ही देखा है। न जाने सरकार ने इस जूए को क्यों encourage किया है।

माधवमहाराज—(रामजीदास की तरफ देख सहृदय मुस्कराकर) घुड़दौड़ जारी किया है इसी लिये कि तुम लोगों को उसके बहाने लूटा जाय।

रामजीदास—(विनम्र) नहीं सरकार, यह बात तो नहीं है मगर वाकई वजह समझ में नहीं आती।

माधवमहाराज—(गंभीर) देखो मेरी पॉलिसी यह है कि किसी भी तरह बाहर वाले बड़े-बड़े लोग गवालियर में आवें और यहाँ की हालत, यहाँ का एडमिनिस्ट्रेशन, यहाँ के तरीके और कानूनों से वाकिफ होकर तमाम बातें देखलें।

रामजीदास—(समझते) जी सरकार!

माधवमहाराज—बाहरवाले जो ब्रिटिश इन्डिया में रहते हैं उनका ख़्याल हिन्दुस्तानी रियासतों की तरफ से बहुत खराब है और चन्द रियासतों के तजुर्बों ने उनके ख़्यालात को पुख़्ता

कर दिया है। मै चाहता हूँ के लोग यहाँ आकर खुद अपनी नजर मे ग्वालियर को देखे, और यह इत्मीनान करले कि हम यहाँ के रहने वाले भी उन्हीं की तरह आदमी है, जगली जानवर नहीं है।

रामजीदास—बेशक बजा।

माधवमहाराज—जब उनकी खातिरी हो जायगी तब वे लोग बिना डर के अपना कारोबार यहाँ जारी करेंगे और इस तरह रियासत की तरक्की और बहबूदी होगी। मिसाल के तौरपर जिन्होंने इसी तरीके पर आनकर यहाँ मिल जारी किया। (सामने दीनदयाल और गंगादीन को आते देख) ये लोग आज यहाँ कैसे आए

रामजीदास (साश्चर्य) ये—आप इन्हे भी पहचानते हैं।

माधवमहाराज—भगवान की कृपा से मै अपनी रियासत मे रहने वाले एक-एक आदमी को दोस्त की तरह जानता हूँ..

रामजीदास -(सविनय) सरकार की यह खूबी सरकार [illegible] है।

[[illegible] चिन्तापूर्ण रेखाओं और आँसुओं से तर—आधे पागल की तरह हाथ मे एक खुला पत्र लिये महाराज के सामने आता है। [illegible] हैरान [illegible]]

धनिकलाल---(सनक) यह है सरकारआली उसका ख़त. ! वह मिली थी। आपको ? वह है ? कहाँ है वह ग़रीब-परवर वह मेरी प्राण है.

न हो दिल ही जो सीने मे तो

सरकार उस्ताद ने लिखा है।

कोइ मेरे दिल से पूछे
तेरे तीरे नीमकश को
यह ख़लिश कहाँ से होती
जो जिगर के पार होता

मै पढ़कर सुनाऊँ ?

रामजीदास—(हैरान) आपके दिमाग मे कुछ खलल...।

धनिकलाल—(तुरन्त) कहते है जिसको इश्क खलल है दिमाग का।

माधवमहाराज—(सहृदय, आतुर) क्या बात है मास्टर साहब ! आपने यह कैसी गत बना रखी है—यह ख़त किसका है ?

धनिकलाल—(करुण) उसीका—मेरी कस्तूरी का

माधवमहाराज—कस्तूरीबाई की शादी अभी हुई नहीं

क्या ! वह तो कोई हफ्ता भर पहले ही हो जाने वाली थी—उसके लिए लश्कर में उपहार तक भेजे गये थे।

गंगादीन—(करुण) अन्नदाता, शादी की पूरी तैयारी हुई- रस्में हुईं--बारात आई--मण्डप मन्त्रों से मुखरित हुआ. ..

धनिकलाल— फिर भी शादी मेरी बेटी को ना-शादियों की दुनिया में हासिल न हो सकी मण्डप ही में अभी सिन्दूर की रस्म होने ही वाली थी कि उसने न जाने किधर से बिजली की तरह कौंध लंबे छुरे से दूल्हे की छाती को फोड़ दिया—बेचारा एक साँस भी न ले सका---और मैं जबतक परिस्थिति सँभालूँ तबतक वह बह लाडिली गायब ! तब से आजतक (रोता है) सरकार, नजर ही—वह जिसे देखे बगैर मैं रह नहीं सकता रोज-ब-रोज घुटा-घुला-घटा जा रहा हूँ।

माधवमहाराज— खत में बाई ने क्या लिखा है मास्टर साहब ! जरा पढ़िए मुझे दीजिए— (हाथ बढ़ाते हैं)

धनिकलाल— (व्यग्र) आप किसी से पढ़ा लें अन्नदाता ! मैं उसे ढूँढ़ने जा रहा हूँ—वह शरीफ, भोली, गाय-सी सीधी लड़की बिना उसके मेरा बुढ़ापा-नरक हो जायगा। (तीव्र गमन)

माधवमहाराज— (उदास) अरे गंगादीन ! तू भी पागल हो गया—जा उसके पीछे भागा जाता है !

गंगादीन—(धनिकलाल के पीछे भागता) मैं दादाजी

को कभी छोड़ नहीं सकता .

रामजीदास—(हैरान) सरकार, माजरा क्या है .पहेली की तरह यह मेरी समझ ही मे नहीं आ रहा है।

माधवमहाराज—(खत वह रामजीदास को देते हुए) ज़रा इसे पढ़िये तो !

[रामजीदास गौर से देखने के बाद वह खत जोर से पढते हैं]

श्रद्धेय दादाजी !

आपको यह पत्र लिखते मेरा कलेजा टूक-टूक हुआ जा रहा है, फिर भी, अब सहन के बाहर बात हो गयी है। हमारे समाज ने नारी-जीवन को ऐसा तिरस्कृत कर रखा रहा है कि समझदार का तो जीना ही दुश्वार है। क्या बहुत से पुरुष ऐसे नही होते जिन्हे विवाह-शादी की इच्छा ही नही जागती और बिना हल्दी से हाथ रंगे ही वह सो जाते हैं ? यदि प्रकृति या परमेश्वर वैसे पुरुष रच सकते हैं तो क्या वे वैसी स्त्रियॉ भी नहीं संवार सकते ? भगवान साक्षी हैं—दुष्ट पुरुष-प्रेम मेरे हृदय मे कभी जागा ही नही और मैं हमेशा एकमात्र अपने देवता स्वरूप दादाजी के आशीर्वाद ही मे जीवन का स्वर्ग देखती रही। आख़िर क्यों मेरा व्याह आपने पक्का किया ? समाज के डर से ? क़र्ज़ उतारने को ?—मुझे तिल-तिल, घुला-घुला कर मार डालने को ? वह पुरुष मुझे सपने मे भी चाहता नही था—होता तो क्या उस अभागिनी विधवा के साथ सन्तुष्ट

भागता—उसके लिए हत्या तक करता ! महाराज ने मोहवश मुझे मुग्ध जान, उसे जॉबख्शी तो दी लेकिन यह भूल गये कि मेरा पति हत्यारा हो गया था। मगर भगवान की कृपा से उस विधवा बहन ने मेरी जान बचा ली—नहीं तो मण्डप के यूप से बाँध कर आपने तो बलि-पशु मुझे बना ही मारा था।

[इसी वक्त सहसा एक तरफ से कस्तूरी आती है—दीवानी-सी, कुन्दन की पोशाक में जिसके चिथड़े उड़ गये हैं। उसके बाल बिखरे, ओठ सूखे, आँख बड़ी हैं]

कस्तूरी—(उत्तेजित) हा हा हा ! सरकार मेरा पत्र सुन रहे हैं —तो दादाजी आ गये ! मैं बिना उन्हें देखे मर भी नहीं सकती थी, बराटी जैसे बिना सत्कार से बातें किये—अन्नदाता !

माधवमहाराज—(सदय) कस्तूरीबाई—जरा शान्त तो हो—क्या दशा है यह तुम्हारी ?

कस्तूरी— सरकार ! मैंने जहर खा लिया है—और अब [illegible] भी लुकमान भी मुझे मरने से बचा नहीं सकते। हजूर ! [illegible] सरकार से एक प्रार्थना करने आयी हूँ

माधवमहाराज—(उत्तेजित) अरे कौन है—डाक्टर बुलाओ [illegible] !

कस्तूरी ([illegible] ने एक कटार निकाल) मैं कलेजा [illegible] हूँगी अगर आप मुझे [illegible] देना चाहेंगे। मैं

नारी-जीवन को नरक समझती हूँ—दया-वश पुरुष क्या परमात्मा को भी किसी को नरक में रखना शोभता नहीं।

माधवमहाराज—(सजल) बेटी ! मैं तुझे अपनी बेटी की तरह मानता हूँ।

[एक-एक कर कई डाक्टर आकर खड़े होते हैं]

कस्तूरी—बरसों से मुझे—मुझ पढ़ी-लिखी और दादाजी के पुण्य-प्रेम से पोषित लड़की को—सारा समाज मुंह भर-भर कर गालियाँ दे रहा है—जब वह विधवा के साथ भागा तो मैं अभागिनी पुकारी गयी, जब उसने खून किया तो मैं भुतनी—जिसके सबब दिमाग खराब होजाय और अब—अब सारा महादपुर मेरे नाम की छाया से कांपता है। मैं पूछती हूं सरकार ! इसमें मेरा अपराध ? यही न कि मैं औरत हूं ? मैं इस चोले से नफरत करती हूँ

रामजीदास—सरकार, इसकी हालत बद से बदतर होती जा रही है।

कस्तूरी—मैं कहने आयी हूं आलीजाह बहादुर ! कि जैसे आपने उस मर्द को, मेरे लिए, खून करने पर भी बख़्श दिया था वैसेही उस बेचारी विधवा को भी बख़्श दीजिएगा। वह बेगुनाह है। कोई औरत साधारण-स्थिति में खून नहीं

कर सकती। (पछाड़ खाकर गिर पड़ती है—विष के कुप्रभाव से) दादाजी ! आओ, हम दोनों साथही चलेंगे दादाजी !

माधवमहाराज--(व्यग्र डाक्टरों से इशारे से कस्तूरी को सँभालने को कहते, डाक्टर बढते भी है तीव्र---लेकिन वह भयानक रोकती है।)

कस्तूरी- दूर हटो—बोलते-बोलते मर जाने दो! (महाराज से हाथ जोड़कर परम विनीत) अन्नदाता—दादाजी को बुला दीजिए (महाराज के इशारे पर कई सिपाही दौड़ते हैं) पुरुष-जाति के होने पर भी मेरे दादाजी न तो पुरुष है और न स्त्री वह केवल हृदय-ही-हृदय है।

माधवमहाराज- कस्तूरीबाई, अगर मरना ही निश्चित हो तो भी जहर की हालत मे डाक्टर आराम पहुचा सकते है—जिस तरह तुम अपनी शक्ल नहीं देखती रही हो वैसेही शायद आवाज भी सुन नहीं रही हो।

कस्तूरी (स्वर्गीय मधुर) दया-दया करो अन्नदाता ! मैं घुटी रह मर चुकी हूँ महीनों से—बरसों से ! स्त्री होने के कारण [illegible] ही ! भगवान आपका सदा मंगल करें—जय हो महाराज की ! दादाजी हमेशा हमें समझाते रहे कि हमारे माधव महाराज [illegible] अकबर की तरह महान है—बाबर की तरह शेर [illegible] की तरह [illegible] !

[इसी वक्त दूर पर किसी लाश को उठाये आते सिपाही नजर आते हैं—एक बड़ा अफ़सर आगे बढ़ कर माधव महाराज से]

अफ़सर—हजूर मोअल्ला ! महादपुर के मास्टर धनिकलाल की यह लाश है—सड़क पार करने मे सफलन होने से वह एक मोटर गाड़ी के धक्के से खत्म हो गये !

माधवमहाराज—(लाश की तरफ लपकते) क्या ! परमात्मा ! !

[इसी वक्त कस्तूरी तीर की तरह टूट कर सिपाहियो से लाश छीन कर उससे लिपट जाती है]

कस्तूरी—दादाजी ! दादाजी ! लो ! लो ! (चूमती है बूढ़े के मृत, दाढ़ीदार, दार्शनिक-मुख को) लो ! तुम मुझे चूमते नहीं थे—हृदय से लगाते नहीं थे—कहते, दूर—अब तू सयानी हो गयी और गाते थे गालिब उस्ताद की गजल—

मैं उसे देखूं भला कब मुझसे देखा जाय है ।

दादाजी ! दादाजी !

डॉक्टर—(हैरान) पागलपन के भी आगे !

रामजीदास—इसको मुर्दे से अलग करना चाहिए .

[कई डाक्टर अलग करने को झपटते है—मगर अब वह चुप हो गयी है और निहायत सुन्दरी दिख रही है—कैसी छबीली मुस्कान उसके होठों पर खिली है कि स्वर्गीय !]

डाक्टर—(कई) सरकार ! ये दोनो अब अलग नहीं किये जा सकते

रामजीदास—(भर्राये गले से) क्या ? मर गयी ? दोनों की अजीब मौत

माधवमहाराज—(जलद-गभीर) मैं तो मौत नहीं अब इस वाकया को शादी मानता हूं। (गभीर उसाँस) आह ! वेदना... (सीने पर हाथ)

कवि (गभीर) सरकार, कवि 'प्रसाद' का यह गीत...

[और घायल की तरह करुण—कवि तड़प कर गाता है]

आह ! वेदना मिली विदाई
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित
मधुकरियों की भीख लुटाई

× × ×

लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी
रही बचाये फिरती कबकी
मेरी आशा आह ! बावली
तूने खो दी सकल कमाई !
चढ़ कर मेरे जीवन-रथ पर
प्रलय चल रहा अपने पथ पर

मैंने निज दुर्बल पद-बल पर
उससे हारी होड़ लगाई !
आह ! वेदना मिली विदाई !

[सभी की आँखों मे सहज अश्रु-प्रवाह]

तीसरा दृश्य

तीसरा अंक समाप्त

बस



